लाम्बी नाक

नाट्य सग्रह

सूरजसिह पवार

पवार प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे बीकानेर (राज)
फोन 0151 2206057

लाम्बी नाक

नाट्य सग्रह

सूरजसिह पवार

पवार प्रकाशन
रामपुरिया कॉलेज के पीछे बीकानेर (राज)
फोन 0151 2206057

आवरण — सूरजसिह पवार
सस्करण — प्रथम 2005
मूल्य — एक सो पेतीस रुपये मात्र
लेजर टाइप सैटिग — राजस्थान कम्प्यूटर एण्ड प्रिण्टर्स रामपुरिया मौहल्ला बीकानेर
मुद्रक — कल्याणी प्रिण्टर्स अलख सागर रोड बीकानेर

Rs. 135 00

LAMBI NAK (Drama Collection)
BY
SURAJ SINGH PANWAR

मदिरापान सू कोसा दूर प्रगतिशील विचारधारा रा पोपक
खेल जगत शिरोमणी साहित्यानुरागी कला मर्मज्ञ
अर्जुन पुरस्कार प्राप्त अन्तरराष्ट्रीय निशानेबाज
देश रा सपूत बीकाण रा गारव

पूर्व सांसद
श्री महाराजा डॉ करणीसिंहजी, बीकानेर
री मधुर स्मृति में

'स्वान्त सुखाय' लिखणो सृजन रो अेक पक्ष है। समाज मे फैली विकृतिया विसगतिया अर कुरीतिया रो दरसाव अर वा रो निराकरण करण सारू मारग तलासणो वै रो दूजो पक्ष है। हूॅ दोना रो ही पक्षधर हूॅ।

'लाम्बी नाक' रै माय म्हैं समाज मे पनप्योडी बाल–ब्याव जिसी कुरीति अर जवानपणै मे विधवा हुवण री पीडा सू छुटकारो पावण सारू पुनरब्याव री अनिवार्यता रो प्रतिपादन करण री चेष्टा करी है। बुढापे ताईं कामनावा आदमी रा लारो को छोडै नीं पछे जवान मिनख सू सन्यासी रो जीवण बितावण री आस करणो कठै ताईं युक्तिसगत है?

काल नै हूॅ परिवर्तन रो पर्यायवाची मानू हूॅ। समय सारू समाज मे जे परिवर्तन नईं हुवै तो समाज मे सडाध पैदा हुय जावै जिकी हितकर कोनी।

'पाच सौ रो नोट' अर 'सीख' म म्हे अबाध गति सू बधतै दारू रै प्रचलन अर दहेज जिसी कुरीति सू प्रदूषित समाज रो चित्रण करया है। अधिकाश अपराधा री पृष्ठभूमि मे दारू री अेक महती भूमिका हुवै। दहेज जिसी परम्परावा सू समाज री जडा खोखली हुय रेयी है। अे री मुक्ति सू ही समाज रो विकास सम्भव है – इसी म्हारी मान्यता है।

ढाटा मार र लुकाव–छिपाव री मानसिकता रै लारै अेक ब्होत वडो अपराधबोध है जिको समाज री स्वस्थ मानसिकता रो परिचायक कोनी। विज्ञान रो दुरुपयोग अपराध री श्रेणी मे आवै है। सरकार आख्या मूद्या बैठी है। स्व विवेक ई काम देसी। वै नै जगावण रो म्हे प्रयास कर्‌यो है। मरज ला–इलाज हुवण सू पैली वै रो उपचार चोखो।

कृति रो मूल्याकन करण रो अधिकार तो सुधी पाठका रा है अे मे हस्तक्षेप करणो अनाधिकार चेष्टा हुसी।

सूरजसिह पवार

भूमिका

श्री सूरजसिंहजी पवार हिन्दी अर राजस्थानी रा चावा अर ठावा नाटककार अभिनेता अर निर्देशक है। वै लारले पचास बरसा सू राजस्थान रै रगमच री सेवा कर रैया है। उणा रै नाटका रो एक नुवा अन्दाज है। ओ अन्दाज आपा नै उणा रै नाटका रै कथ्य अर सिल्प माय साफ तौर सू नजर आवै। वै आपरै नाटका ने खाली नाटक खेलण वास्तै या उणा मे कोई नाटकीय कलात्मक प्रविधिया रो चतुराई सू प्रयोग करण सारू नीं लिखै। उणा री आ स्पष्ट मान्यता है कै वै आपरै नाटका म समाज मे फैलियाडी उण अवखाया नै उजागर करणो चावै जिकी अवखाया सू आपा रो समाज अलखू बोदी रूढिया री बेडिया में जकडीजियोडो है। सूरजसिंहजी समाज म फैल्योडी उण रूढिया उणा सू उत्पन्न समस्याया माथै अर समाज म रैवणआळै उण वादै लोगों माथै सीधी चोट करे जिका आपा रै समाज नै जड बणावणो चावै। वै नाटका रै सवाद सू आपरी विचारधारा नै चोखी तरिया सू स्पष्ट करै।

श्री सूरजसिंह पवार रै इण नाट्य सग्रै 'लाम्बी नाक' म तीन नाटका रो सग्रै है। उणा रा शीर्षक है 'लाम्बी नाक' 'पाँच सौ रा नोट' अर 'सीख'।

इण सग्रै रै पैलडै नाटक 'लाम्बी नाक' मे बाल-विवाह अर विधवा-विवाह री समस्यावा माथै आपरै नाटक रो ताणो बाणो बुण्यो है। घर-परिवार अर समाज रै लोगा रै दबाव में आ र बालिका सालू ने टाबरपणै म उण रो बाप माधासिंग परणाय तो दवै पण वा फेरा री रात ई विधवा हुय जावै। समै रा चक्र चालै। सालू बडी हुवै टाबरपणे म उणरै सागै हुई भयकर घरआळा री गलती रा प्रायश्चित सालू आपरा प्राण दे र पाठका अर दर्शका नै आसू बहावण ने बाध्य करदै। इण नाटक म ऊपरी तौर सू साव गैलो दीखणआळो आकार जिका लखक रा ई प्रतिनिधि है भोत इ समझदार है। वो आपर हास्य अर व्यग्य बाणा सू समाज अर परिवार रै किणी इ सदस्य नै साची-साची खडकावण म कद इ नीं चूके। नाटक रा कथ्य स्थितिया अर उण रा चुटीला सवाद पाठका अर दर्शका ने बाधण री खिमता राखै।

इणी भात उणा रै दूजै नाटक री समस्या दारू पीवण री समस्या सू जुडियोडी है। दारू सू कित्ताई भरिया-परिया घर-परिवार उजड जावै।

दारू पी र इस्या दारूडिया आपरो दारू आपरी लुगाया रा हाडका खडका र उगावे। पॉच सो रै नोट मे मालीराम अर चोर री हास्यपरक स्थितिया म मुलाकात अर उणा रै बिचाळै हुवणआळे सवादा सू इण नाटक रो मर्म परत–दर–परत खुलतो जावै। नाटक रै आखिरी दरसाव म मालीराम री बेटी भीखली आपरै मोटयार रै दारू पीवणे अर कूट खावणे सू तग आ र आपरै बापू कने आय जावै। मालीराम उण रो ब्याह हिरदै–परिवर्तित चोर रै सागै करदै। नाटक रो अत आदर्शवादी होता थका ई आज रै समै री एक महताऊ समस्या न आपा रै सामी उकेर।

नाटय सग्रै रो छेकडलो नाटक दायजै री समस्या माथै आधारित है। दायजै रै लालचिया रा कित्ता चै रा हुवै। उण रसे चै रा नै नाटककार सूरजसिह पवार आपरै नाटक मे सवादा अर नाटकीय परिस्थितिया रै माध्यम सू एक–एक कर उघाडै। नाटक री सास–पात्र कमला अर उण रो बेटो सुन्दर इसा ई पात्र है। सुन्दर रो बापू आपरी समझदारी सू इण लोगा री आख्या खाल।

इण तीना ई नाटका रो वास्तविक रसास्वादन तो इणा नै पढण अर रगमच माथे इणा नै देखणै सू ई आसी। इण वास्तै घणकरी वात्या हूँ इण सग्र रै पाठका खातिर ई छोड दी के इण नाटका नै आछा निर्देशक मचित करे जणे उणा नै पतो लागसी कै सूरजसिह पवार रे नाटका मे अर उणा री नाटय भाषा मे हास्य–व्यग्य री कित्ती जबरदस्त धार अर मार है।

राजस्थानी नाटका रै लिखारा मे श्री पवार आपरै ढग–ढाळे रा एक ई नाटककार है। इण क्षेत्र मे उणा नै आपा फरदी कैय सका। उणा री जोड रा बीजो कोई नाटककार कोनी।

म्हू इण नाटय सग्र रे नाटककार श्री सूरजसिह पवार नै इण रै प्रकासण वास्तै वधाइ अर लखदाद दयू।

– डॉ श्रीलाल मोहता
चितक आलोचक
नत्थूसर मालिया का बास बीकानेर

नाटकों म लिए गए पात्र महज लेखक की अपनी कल्पना मात्र हैं किसी व्यक्ति विशेष को लेकर इनकी सरचना नहीं की गई है। फिर भी बदलते युग मे घटनाओं में समानता आ जाना सयोग मात्र होगा। लेखक का उद्देश्य अथवा अभिप्राय किसी जीवित या मृत व्यक्ति पर आक्षेप करना नहीं है और इस अप्रत्याशित सयोग के लिए वह उत्तरदायी नहीं है।

— प्रकाशक

लाम्बी नाक

पैलो दरसाव

(माधोसिह री हवेली हवेली रो अेक कमरो। कमरै मे माधोसिह रै बाप आइदानसिह री फोटू लागोडी है। आरामखुरसी माथै माधोसिह री विधवा मा रतनकवर बैठी भजन सुणे। माधोसिह री घरआळी सिरेकवर दूध रो गिलास लेय र आवै।)

रतनकवर — आओ बींदणी ओ भजन सुणो। कित्तो चोखो गायो है। भजन सुण र म्हारी आख्या मे तो आसू आयग्या।

सिरेकवर — अै भजन म्हैं तो हर रोज ई सुणू हूँ मा सा। अै भजन तो आप रा कुवरजी नै सुणण रो कैया करो।

(दूध रो गिलास झलावै)

ला आप दूध अरागो। म्हैं दूध ठण्डा कर र लाई हूँ।

(गिलास झालती बोलै)

रतनकवर — मिनखा नै भजन सुणण रो टेम कठै बींदणी सा। बै तो दिन-भर हुक्का तास-चौपड खेलसी।

(दूध पी र गिलास पाछो झलावै)

सालू बेटी उठी कोनी बीदणी हाल ताई सूती है ?

सिरेकवर — सालू ता कणे ई उठगी अर न्हा-धो र फूठरी-फरी हुय र औकार बन्ना री आगळी पकड र मिन्दर गई हे।

रतनकवर — बा तो इया ई घणी फूठरी-फरी है। फेरू थे टीका-टमका कर र म्हारी छोरी रै चाख लगवासो काई ?

सिरेकवर — हू क्यारा टीका-टमका करू हूँ मा सा। म्हनै तो घर-गृहस्थी रै काम सू ई फुरसत कोनी। बा खुद न्हा-धो र मिन्दर भाज जावै।

रतनकवर वा ता टावर है समझै कोनी पण थे तो टावर कानी। थे ता छोरी रा ध्यान राख्या करो। म्हारी सालू रै करी ई निजर लागगी तो पडिया देवीद्वारा धोकता फिरस्या।

सिरेकवर आप म्हारी तो सुणो कोनी मा सा। म्हें चूल्है माथे सू दूध नीचै उतार र आई जितै तो वा बारै भाजगी। म्हैं अवै केरो–कैरो ध्यान राखू ?

रतनकवर केरा–वैरा ने रवण दा अर म्हारी सालू रो ध्यान राख्या करो। क्यू, ठाह कानी थान ? कित्तै जतना सू पाळी है बे ने ! काई म्हारी सुणो ई कोनी।

सिरकवर कुण को सुणे नीं हुकम। म्हें तो आप रे हेले रै सागै भाजती आऊ।

रतनकवर भाजता नीं आसो तो करसो काई ? म्है अेक को जिण्यो नी। पाच–पाच जिण्या है अर अेक–अेक सू लूठा।

सिरेकवर आज दिनूगै–दिनूगै म्हैं गरीबणी माथै ओ कोप क्यू मा सा ?

रतनकवर केवो हो नी के भाज्या आवो हो तो कैरै माथे किरियावर करो हो ? नई तो थाने इत्तो चोखो ठिकाणो पडिया कठै हो ! पण मनै ई काळो खायो कै फूठरापो देख र हामी भर दी। मनै काई ठाह हो कै रोहीडै रो फूल देखण माय ही फूठरा हुवै बाकी बीं मे सुगध रो कोई लाव–लस ई को हुवै नीं।

सिरेकवर काई बात हे मा सा ? आज बिना बात आळभा माथे आळभा दवण लाग रैया हा। काई जाण–अणजाण मे म्हासू चूक हुयगी हुवै तो मनै माफी बगसावो।

रतनकवर म्हारी कैयाडी साची बात ई थानै ओळभा दीखै तो म्हारै मरिया सगळा सोरा–सुखी अर आजाद हुय जासा।

सिरेकवर म्हानै इसी आजादी चाइजै कोनी हुकम। आप विराज्या हो जित्तै हवली री साभा हे आण है घर री। सगळा कुटुम्ब अेक वुहारी मे वध्योडो है।

रतनकवर व्हात लावी जवान है थारी घटै–भर सू लपर–लपर

करण लाग रिया हा। अेक छोटी–सी बात कैयी कै टावरा रो ध्यान राख्या करो।

सिरेकवर — हूँ आपनै अरज करू हूँ, हुकम। मिन्दर मे नगारा अर छमछमा बाजता सुणीजै अर वे रै पगा मे घूघरा बध जावै इनै विनै ताक्या अर ओकार वन्ना री पकडी आगळी अर बा जा बा जा

(माधोसिह आवै)

माधोसिह — आज भोरा भोर किसो रामायण पाठ सरू हुयग्यो मा सा ?

रतनकवर — तनै रामायण पाठ ई सूझे जोडायत नै अणूती माथै चढा राखी है। हजार बार समझा दी कै म्हारी सालू रै टीका–टमका कर र घर सू बारै ना निकळण दिया करो। जे काजळ–टीकी रो इत्तो ई सोक है तो वै रै गाला रै काजळ लगा दिया करो ताकि म्हारी छोरी नै चाख नीं लागै पण अे अभागण री सुणै कुण ?

(सिरेकवर माय जावै। हस र)

माधोसिह — पाच–पॉच बेटा री मा अर अभागण । फेरू भागण कैनै कैवै मा सा ?

रतनकवर — जिकी रो खसम जीवतो हुवै।

माधोसिह — देखो हुकम आप दुधारी तलवार मत चलाया करो।

रतनकवर — क्यू ? म्हैं काईं गलत कैय दियो ?

माधोसिह — आप दाता रै सरगवास हुवण सू पेला आ फरमाता कोनी हा कै सावरियो आ रे हाथा मे उठा लवै तो भले भरीज जाऊ।

रतनकवर — कैवती ही पण सावरियो म्हारी सुणी कठे ?

माधोसिह — सावरिया आप री किसी–किसी बात सुण मा सा ? आप सागे साग आ भी फरमाता के ज हूँ पला मरगी तो दाता रा सुधारा कुण करसी ?

(सिरेकवर चाय लेय र आवै)

रतनकवर — अवे थे दोनू जणा मिल र मने जीतण थोडी ई देसो।

चाय पछै पीये पैला म्हारी सालू बेटी नै म्हारै कनै लेय र आओ।

माधोसिंह ओ म्हारा भोळा मा सा आप सालू रा इत्ता जतन अर इत्तो मोह मत राख्या करो। बडी हुया बैनै सासरै जावणो है।

रतनकवर म्हैं म्हारी सालू नै इसे कवर नै परणासू जिको कुवर म्हारै अठै घरजवाई बण र रैवण नै राजी हुसी।

(सिरेकवर माय जावै)

माधोसिंह अेक बात आपनै पूछू मा सा ? म्हारै सासरैआळा म्हनै घरजवाई राखण नै आपरी कित्ती कित्ती गरजा करी। आपरै हाथ–पग जोडिया पण थे मनै घरजवाई राखण नै राजी हुया ? आपरै तो अेक नईं पॉच पॉच पाडू हा।

रतनकवर अबार रै टेम मे अर पेला रै टेम मे फरक हो। पेला घरजवाई री सासरै मे कुत्तै जित्ती इज्जत हुवती अर लोग मोसा देवता। क्यू, आ केवत सुणी कोनी कै 'बैन रै घर मे भाई कुत्तो अर सासरै मे जवाई कुत्तो।

माधोसिंह वाह मा सा चित ई आपरी अर पुट ई आपरी।

(सिरेकवर आवै)

सिरेकवर आपने दफ्तर पधारणो हे म्ह थाळ पुरस र आई हूँ।

रतनकवर म्हासू माथो लगावण लाग रियो हे अेन दफ्तर जावणो थोडी ई दीखै।

(घडी देख र)

माधोसिंह जाऊ हूँ मा सा हाल दस बजी कोनी।

(माधोसिंह अर सिरकवर माय जाव अर बारे सू सालू अर ओंकार माय आवै)

सालू दादीसा परसाद लो।

(सालू परसाद देवे)

रतनकवर मिन्दर मे देर ब्होत लगाई बेटा ?

(बीच मे बोलै)

ओंकार — आज शिव–मन्दिर म सजावट ब्होत ई बढिया हुई है दादीसा रात नै मिन्दर मे जागरण भी है।

रतनकवर — पैला थे माय जाओ अर खाणो खाओ। बींदणी कणे रा उडीक रिया है।

(सालू माय जावै माधोसिंह अर सिरेकवर आवै अर माधोसिंह बारै निकळ जावै।)

सिरेकवर — आप खाणो कणै अरोगसो हुकम ?

रतनकवर — म्हारी तबीयत ठीक कोनी बींदणी। रात रो खायोडो ई को पच्यो नीं। आज लाघण राखसू।

सिरेकवर — हुकम हुवै ता आकार बन्ना न भेज र डाक्टर भूपन्दरजी नै उथळो करादा। वै आर देख लेसी।

रतनकवर — देखो बींदणी थे अे डाक्टरा रै चक्कर मे मत पडिया करो। झूठा कठैई रा। कूडी बीमारी बता र आदमी रो धींगाणै ई माथो खराब करदै। अबै सौ रै अेडै–गैडै हूँ, मरसू नई तो अमर हासू ?

सिरेकवर — थूका आपरे मूढै सू, हुकम। इत्ती माडी अर कावळ बात बोल्या। आप सू बडी–बडी उमर रा लोग बैठया है गाव म।

रतनकवर — बैठया हे तो भाग हे टाबरा रा इया मरता रा किसा गाडा जुतै हे ? बस अेक बात मन मे है कै मरण सू पेला सालू बेटी रो ब्याव देखलू।

(पग दाबती बोलै)

सिरेकवर — सालू रा दूध रा दात ई को टूटया नीं मा सा। इत्ती–सी उमर मे आप सालू नै परणावण री बात करो।

रतनकवर — थे परणीज र आया जणै थे कित्ता क हा ? थे भी तो टाबर ई हा आवता ई घर सम्भाळ लियो। क्यू, इत्ता बगा भूलग्या ?

सिरेकवर — वो टेम अलग हो हुकम। फरू म्हें ब वगत पन्द्रह–सोळै री तो पक्की ही। अे खातर अबार दस बरसा री सालू नै घर सू किया काढदा ?

रतनकवर	घर सू काढण रो कुण कैवै है बींदणी ? म्हैं कैयो नी थानै कै कोई इसो कुवर देखो जिको आपणै अठै घरजवाई रैवण नै त्यार हुय जावै।

सिरेकवर	पण आज रै टेम मे घरजवाई रैवण नै कुण त्यार हुसी हुकम ?

रतनकवर	नइ हुसी तो म्हारी सालू घर मे कुवारी बैठी रैसी। बै रो दादो घणोई छोड र गयो है। सालू रा पोता–पोती खावै तो ई नीं खूटै।

(माधोसिह आवै)

माधोसिह	मा सा थे सफा भोळा हो। सालू नै परणासो ई कोनी तो सालू रै पोता–पोती कठै सू हुसी ?

रतनकवर	इत्तो वेगा आयग्यो या दफ्तर गया इ कोनी ? फेरू म्हैं तो थारी जोडायत सू सालू नै परणावण री बात ई तो कर रेयी हूँ कै सालू कुवारी क्यू रैसी ? म्हारी सालू खातर अबार सू ई रिस्ता माथे रिस्ता आ रैया है क्यू, बींदणी ?

माधोसिह	मा सा सालू अबार टाबर है किसी व्याव री बात करो आप ?

(औंकार आवै)

ओंकार	कैरै रिस्त री बात हा री है काकोसा ?

माधोसिह	थारा दादीसा सालू रो व्याव करण री बात कर रया है।

ओंकार	क्यू दादीसा काल डाक्टर री सुइ ऊंधी लागगी काई ? जिको ऊंधी बात्या करण लाग रेया हा।

रतनकवर	क्यू रे नारदिया ! म्हे काइ गलत कैय दिया ? सालू बेटी न परणासा कोनी तो बन कुवारी घर म बैठी राखणी है ?

औंकार	कुवारा आज ताइ करा इ टाबर रया हे ? सालू दस बरसा री हुई कोनी अर थ बेन परणावण री बात करण लाग रैया हा।

रतनकवर	तो म्है सालू रो व्याव देखण नै जीवती बैठी रैसू ? म्हनै

सो बरस पूचणआळा है।

औंकार — आप काल मरता आज मर जाओ दादीसा पण सालू रो ब्याव तो सालू

(बीच मे बोलै)

सिरेकवर — औंकार वन्ना दादीसा रै सामने इया बोलीजै ? छोटै—बडै रो कायदो ई कोनी ?

माधासिह — मा सा री तो मसखरी करणे री आदत है बेटा। आपा सालू रो ब्याव बा बीस बरसा री हुसी जणै ई करसा।

रतनकवर — मसखरी कोनी म्हैं साची बात कैय रैयी हूँ। हूँ जीवता जीवता सालू रा पीळा हाथ देखणा चाऊ। जे मरगी तो मन री मन म ई ले जासू अर मर र थानै दुख देसू। *(खुरसी सू उठै)* औंकार गडियो ला। म्हैं सज्जनसिग सू मिल र आसू।

औंकार — पधारो पण बै काईं कर लेसी ?

(औंकार अर रतनकवर बारै जावै)

सिरेकवर — मा सा तो अणूतो जिद करण लागग्या पण आपा न केरी ई बात मानणी कोनी। बीस बरसा री नई हुय जावै अर दुनियादारी री समझ नीं आ जावै जित्तै आपा नै बेनै परणावणी कोनी। म्ह पैला सू ई आपनै चेताऊ आप धींगाणै रै दबाव म मत आ जाया। आप निबो घणा हो। जे ब्याव री बात मानली तो मनै कुओ—खाड करणा पडसी। क्यूके मा सा जठसा रे अठे पधारिया ह ता व घर म गाधम घलवासी।

(बारे कानी सू उम्मदसिग आव)

ला भाई पधार आया

माधासिह — अर ! उम्मेदसिगजी आज अचानक किया पधारणो हुयग्या ? गाव म सब खरियत ता है नी ?

उम्मदसिह — सब कुसल मगळ हे। चादकवर रो गाव सू सन्देसो आया कोई बेरै टाबर रै सगपण री बात है। रस्तै म आप रो गाव पडता साच्यो आप रा भी दरसण हुय

जासी अर सिरेकवर सू ई मिलतो जाऊ।

माधोसिह आप म्हारी सुध तो ली।

उम्मेदसिह कवर सा व गावडियै रा आदमी हा खेती वाडी सू ई फुरसत कोनी मिलै।

सिरेकवर भाईसा जीजाजी नै म्हारो इ मुजरो अरज कर दिया अर ओळभो देया कै छोटी वैन नै सम्भाळण री फुरसत कोनी काई ?

माधोसिह आप ओळभा ई देवता रैसो कै कोई नास्तो–पाणी भी भिजवासो ?

(सिरेकवर माय जावै अर सज्जनसिह अर चतरसिह आवै)

माधोसिह पधारो भाईसा।

(उम्मेदसिह खडा हुय र)

उम्मेदसिह जै जोग माया री हुकम।

सज्जनसिह अरे ! आप कण पधारग्या उम्मेदसिहजी ?

(बीच मे बोलै)

माधोसिह बस अबार आप रै आगे आगै ई पग धरियो है।

(उण टेम सिरेकवर चाय री ट्रे लेय'र आवै अर सज्जनसिह नै देख र पाछी अपूठी फिर र माय जावै)

हा हुकम करो भाईसा आप किया पधारिया ?

सज्जनसिह भाई माधोसिह मा सा री आखिरी मनसा हे कै मरण सू पला सालू बेटी रा ब्यावडो देखले। देख नदी–किनारे रा रूखडा है काइ ठा कद बह जावै

(बीच म बोले)

चतरसिह अे खातर म्हारा केवणा हे कै कोई चोखो टावर अर चोखो ठिकाणो दख र सालू बेटी रा हाथ पीळा करदा।

सज्जनसिह क्यू उम्मेदसिहजी आपरी अेमै काई राय है ?

उम्मेदसिह म्हारी राय तो आप मन नइ पूछो तो ई ठीक है हुकम।

आ आप रै घर री बात हे म्हें माफी चावू।

चतरसिहजी आ कोई बात हुई ? आप घर रा कूकर कोनी ? फेरू राय तो पैडै बगते सेण–समझणे मिनख सू भी ली जा सकै। फेरू आप तो सालू बेटी रा मामाश्री हो।

उम्मेदसिह देखा हुकम म्हारी राय पूछो तो ई उमर म सालू बेटी रा ब्याव करण री बात सू माडी काइ बात कानी।

(क्षण–भर रो सरणाटो)

सज्जनसिह हा भाई माधोसिह थें काई सोच्यो ? माजी री आ आखिरी इच्छा हे।

माधोसिह भाइसा मा–सा ता पुराणै ढर्रे रा है पण आप ता समझदार हा अवार सालू री ऊमर ब्याव करण री हे काई ?

सज्जनसिह ऊमर री बात कोनी माधोसिह। माजी री आखिरी इच्छा री यात ह। तनै अर मनै दाना ने ई दीख हे क माजी अबे घणा दिन तो जीवे कोनी। काइ ठा कद हसा उड जाव।

माधासिह देखो भाईसा सालू म्हारै मा सा सू नेडी कोनी पण आप खुद बताआ कै इ छोटी–सी ऊमर मे म्हे सालू नै किया परणादू ? आपा मा सा रा किसा–किसो जिद पूरो करसा ? बारो केवणो हे के म्हें सालू नै इसे कुवर नै परणासू जिको घरजवाई वण र सासरे मे रेवै। अबे म्हे घरजवाइ कठ ढूढता फिरू ?

सज्जनसिह घरजवाइ ढूढण री तन जरूरत कानी माधासिह। अगर तन पसद हे ता म्हार साळ रा बेटा कुवारो बठो हे अर सरकारी नाकर न्यारा ह।

(बीच म बोल)

चतरसिह जाण्या–पिछाण्या ठिकाणा ह भाईसा री बात मान भी लसी नटै कोनी। म्हारी बात मान ता सालू रो ब्याव करदे अर कुवे कनला घरियो सालू रै नाव करदै। अे सू माजी री बात भी रैय जासी अर जिन्दगी–भर सालू

वेटी आपा री आख्या रै रामणै रैसी।

(ओंकार चाय लेय र आवै)

ओंकार — काकोसा आ लोगा री वाता मे आ ना जाया। औ तो जाण है कै भाइ र घरै खाड गळिया इ खावणौ मिलै।

सज्जनसिह — अरे आ भिडाऊ–भाटा ! कठ जलम्या हा म्हारे म्हे खावणौ मरा हा ? क्यू म्हे मीठा कदैई देख्यो कोनी ?

ओंकार — तो सालू अवार परणावणजोग है ? वै घर मे वैठा रूपकवर भुवासा टावरपणै म व्याव कर दियो जवान हुया कोनी अर तीस वरसा सू खूण म वठा दिन काढै।

माधोसिह — ओंकार तू माय जा।

(ओकार माय जावै)

चतरसिह — दख माधोसिह म्हैं म्हारी वात तन कैय दी अवै तनै भाया सू राखणी है ता आखातीज रो अणवूझ सा वो है सालू वटी न फरा ददै। नईं तो आज रै वाद तू थारे अर म्हे म्हारै चाला उठो भाइसा। आ ता पीढिया रो वैर पडणो हे जिको पडसी। अर मा सा री कळपती आतमा भटकती रैसी जिके पाप रो झेलू ओ हुसी।

(दोनू उठै अर वारै निकळ जावै सिरेकवर माय आवै)

सिरेकवर — जठसा आर सू वात करणी घाटै रो सौदो है। धींगाण री धणियाप लगावै दुख दरद म कदैई आय र सम्भाळै कोनी भीड पडिया किसो साथ देसी । मा–सा रै काइ हुयग्यो तो सगळी भूडाइ रो ठीकरो आपा माथ फोड देसी अर ऊमर–भर मैणा–मोसा देसी जिका पाखती मे

(वीच म वाले)

उम्मेदसिह — वात तो साची ह जीजोसा। वस भाई भाई री वटी नीं परणे बाकी ता स्यान लेवण मे भाइ काइ पाछ नीं राख।

माधासिह — आप सही फरमावा। आ लोगा सू ऊजळा राम राम इ चाखा हे। पण करा काई कुठौड खाई सुसरो वेद । इयै घर मे जलमग्या जावा ता जावा कठे ?

सिरेकवर — कठैई जावणो ना कठेई आवणो। मा सा रे दखता–दखता सालू नै फेरा दे दो। आपा जाणसा छारी ठाकर खा र मरगी।

माधोसिह — इया किया मरगी ? आप रावळे जा र भाभीसा ओर सू बात करो। वे काई फरमावे ? अर जे नई मानै फेरू इ अडिया रैवे तो आखातीज र साव री हामी भर आया।

सिरेकवर — हामी ही भरणी पडसी। आप बावळा हुया हो लुगाया आपर धणिया री हुवता आपणी कद सुणसी फेरू मिनखा रे आगे बापडी लुगाया री कदेई चाली है ?

माधासिह — फेरू इ अकर आप बात ता करा वाकी ता अब आखातीज ने दिन कित्ता घटै ब्याव री त्यारी भी करणी है। आपा बेबस हा सालू रा भाग ई माडा दीखे।

ओंकार — आदमी आपरा भाग आपरै हाथा सू रचै है काकोसा। सामनै कुओ दीखे हे बै मे चला र क्यू पडो हो ? अेक नना सो दुख टाळै । ब्याव री हामी ना कर आया इत्ती छोटी उमर मे सालू रो ब्याव आज करणा ना काल करणो।

माधोसिह — तू साची कैवे औंकार। इनै पडू तो कुवो अर बीनै पडू तो खाई – धरमसकट मे पडग्यो। उम्मेदसिहजी आप माय विराजो। मे थोडो भाई सा ब कनै जा र आऊ।

(थोडी देर रो सरणाटो नैपथ्य सू गीत बाजै)

गीत — सुन री सजनी अब क्या सोचे

धीरै धीरै मच माथे अधारो

दूजो दरसाव

(माधोसिह री हवेली हवेली रो अेक कमरो। कमरै मे माधोसिह रा वडा भाई अर काका दुलेसिह वैठा है। सज्जनसिह बैठा–बठो रावण लाग जावे।)

दुलेसिह — देख इया टावरा दाइ काई करै है भाई सज्जनसिह। थे ईया करसो ता टावरा ने कुण सम्भाळसी ?

सज्जनसिह — साच्यो हा के माजी वेठया थका सालू बटी रो ब्यावडो देखलै। चाखी सोची अर ऊधी पडगी।

चतरसिह — गलती सगळी आपणी है भाईसा। माधोसिह तो सालू वेटी रो ब्याव करणनै थोडो ई राजी कोनी हा पण आपणी जिद रे कारण बा कुवै मे कूदग्यो अर आज ओ दिन देखणो पडग्यो। अबे दोस केने देवा ?

दुलेसिह — अबै हुणी ने कुण टाळ सके हे वेटा। रूपकवर तीस बरसा सू घर वठी ह अर आपा चाट खावोडा फेरू ई समझया कोनी अर खुद रै पगा माथे कुवाडी मारली।

सज्जनसिह — आ कुण सोची ही काकोसा कै रात नै आपा सालू बेटी ने फेरा देसा अर दिनूगै वेरो सुहाग ई उजड जासी।

चतरसिह — आजकाल अे ट्रक ड्राइवर आधा हुय र गाडया चलावे ना ता वाने पुलिस रा डर अर ना कानून रो।

सज्जनसिह — रीस ता इसी आव ह काकासा के ट्रक ड्राइवर रा टुकडा कर नाखू, कुत्त र गाळी मारदू।

(ओकार पाणी लेय र आवे)

ओंकार — ट्रकआळ रो अेमे काई कसूर है बावोसा ? मारुती खडै ट्रक रै माय जा र घुसी रामूडो दारू मे धुत हो।

सज्जनसिह — तू हर बात मे टाग ना अडाया कर। बापडो रामू दारू

रै हाथ ई को लगावै नीं।

औंकार — अेक तो दारू रै आप हाथ को लगावो नीं अर अेक रामूडो दारू रै हाथ को लगावै नीं। पूछो दादोसा नै रात री तीन बज्या ताईं कुवे माथे बेठयो रामूडा काईं करतो हो ?

दुलेसिह — देख भाई सज्जनसिह ओंकार केवै जिकी बात सोळे आना साची है। रामूडो जेठियो अर अमरजीआळो धनियो रात रा तीन बज्या ताईं कुवै माथे दारू पी रैया हा। म्हैं जा'र दाकल मारी जणै बै बठे सू उठ'र भाज्या।

(औंकार माय जावे)

चतरसिह — आ बात आपनै पैला बतावणी ही काकोसा। म्हें बै कमीण नै गाडी रै हाथ ई को लगावण देवतो नीं।

दुलेसिह — अबे हूणी नै कुण टाळ सकै बेटा। हूणी ही जिकी तो हुयगी अबै तो माधोसिह नै सम्भाळो बेरी हिम्मत बधावो।

सज्जनसिह — किया हिम्मत बधावा काकोसा। वो तो तीन दिन सू ऊंधे माथे पडियो है। कैसू बात ई करे कोनी

(बीच मे बोले)

चतरसिह — बिनै माजी बेहोस पडिया बडबडावै है।

सज्जनसिह — बडबडावै हे तो बडबडावणदे माजी नै। माजी री बाता मे आय र आपा सालू बेटी री जिन्दगी उजाड दी।

दुलेसिह — जो भी घटगी बने ता अब घाडा इ नी नावडे बटा। अबे तो सगळा नै हिम्मत बधावो। अर सज्जनसिह तू थारे सासरे भी जा र आ। बा र भी मोटियार जवान बटे री काची मौत हुई है।

सज्जनसिह — काकोसा म्हें बा रे दिन ता अठ सू हिलू ना डिलू। आपणै घर माथे भी दुख रो पहाड टूटयो हे। दस साल री सालू वेटी आ पहाड–सी जिदगी किया काटसी ?

चोखो रैवतो हे [illegible] रे [illegible] मर [illegible]

वूढो आदमी घाव तो घणोई गैरो लाग्या है ठाकरा पण सावरियै आगे जार कैरो ? अवै तो ओ घाव समय रै सागै ही भरीजसी।

दुलेसिह साची वात है चोधरी। अै घाव ता समय रै सागे–सागै ई भरीजसी। सालू वटी रै आगोतर रै कोइ करमा रो फळ है। क्यू ता दादीसा सालू नै परणावण री जिद करता अर क्यू ओ दिन देखणो पडतो।

(आकार आवै)

ओंकार दादोसा काकीसा फरमायो है कै आप लाग खाणो अरोगलो अर काकोसा ने ई समझाओ तीन दिन सू दाणो ई मूढै म घाल्यो कोनी वा।

दुलेसिह गैलो है बो। अवै तो सगळा काम करणा ई पडसी वेटा। मरणआळै रै सागे मरीजै तो है कोनी वैनै तो भूलणो ई पडसी।

वूढो आदमी साची हे ठाकरा खूटी री वूटी कानी।

दुलेसिह *साची है चौधरी मौत जिकी घडी जिकी ठौड हावणी* हुवे सो कोस आतरै सू आदमी ने बुला लेवै।

चाधरी आपरा केवणो साचो हे ठाकरा जलमणै सू पैली ही वेमाता अमिट लेख लिख दवै वैमे कोई राई बधे ना तिल घट।

दुलेसिह आ ई बात है आपा रै महाकवि पृथ्वीराजजी रो किस्सो ता था सुणियो हुसी।

चोधरी आप दिल्ली रै राजा पृथ्वीराज चौहान री बात करो हो ?

दुलसिग अरे नई चोधरी वा कठ रो कवि हो। हूँ तो बीकानेर रै राजा रायसिहजी र छोटे भाई महाकवि पृथ्वीराज पीथळ री बात करू जिके राजस्थानी भाषा री डिगळ शेली मे वलि क्रिसन–रुकमणी री नाव रो ग्रथ लिख्यो। वा आपरी मोत आगूच बता दी ही।

सज्जनसिह आ वात तो म्हा कोनी सुणी काकासा पण आ तो सुणी ही कै बे लिखारा तो सातरा हा वा आपरी मौत आगूच

बतादी आ को सुणी नीं। कैवै कै बै बादशाह अकबर रै दरबार मे नौरतना मे गिणीजता।

दुलेसिह वै त्रिकालज्ञ योगबल रा धणी अर दिव्यदृष्टि सम्पन्न हा। बा रो आत्म–साक्षात्कार करयोडो हो। बै चमत्कारा री बाता करया करता।

अेक दिन बादशाह अकबर बा नै पूछ लियो कै जरूर कोई पीर थारै वस मे है। अच्छ्या आ बताओ पृथ्वीराज कै थारी मौत कद अर कठै हुसी ? पृथ्वीराजजी थोडो सोच र जवाब दियो कै आज सू ठीक पॉच महीना बाद फलाणै दिन फलाणै बगत मथुरा रै विश्रान्त घाट माथे म्हारी मौत हुसी। हुणी नै अणहुणी करण खातर बादशाह अकबर सैकडा कोसा दूर अटक रै पार गवरनर बणा र पृथ्वीराजजी नै भेज दिया अर अे बात ने बादशाह अकबर भूल–सो गयो।

पॉच महीना बाद अेक इसो मौको आयग्यो कै अेक भील चकवा–चकवी रो जोडो लेय र दिल्ली रै बजार मे बेचण आयग्यो। आ बात बादशाह अकबर कनै पौंची कै चकवा–चकवी मिनख री भाषा मे बाता करै। बादशाह चकवा–चकवी ने आपरै दरबार मे मगा लिया। पखेरू पींजरै मे बन्द हा। बा ने देख र नवाब रहीम खानखाना कविता रो अेक चरण रच्यो – 'सज्जन वारूँ कोडधॉ या दुर्जन को भेट। दूजो चरण खानखाना सू रचीज्यो कोनी। जणै बादशाह अकबर ने महाकवि पृथ्वीराज री याद आई अर बा ने बुलावणनै अेक आदमी अटक रै पार भेज दियो।

पृथ्वीराजजी बादशाह री आज्ञा सुण र रवाना हुयग्या अर आपरै इस्टदेव भगवान किसन नै याद कर मथुरा हो र आरिया हा अर मृत्यु री बेळा देख र पृथ्वीराजजी अकबर रो भेज्योडो दूहो पूरो करयो –

'रजनी का मेळा किया बेह के अच्छर मेट

दूसरो चरण लिख र बादशाह अकबर नै भेज दियो अर

पृथ्वीराजजी रो प्राणान्त हुयग्यो।

चतरसिंह काकोसा म्हे तो ओ दूहै रै अरथ नै समझ्या ई कोनी।

दुलेसिंह ओ रो अरथ है – चकवा–चकवी रात नै भेळा को रैवै नीं इसो विधाता रा लेख है पण बहेलियो वा नै पींजरै म बन्द कर दिया जिकै सू वा नै रात नै भेळो रैवणो पडग्यो। ओ वैरो उल्लेख है।

खानखाना आपरै पैलै चरण मे कैयो –

सज्जन वारूँ कोडधॉ या दुर्जन की भेट

मतलब ओ दुस्ट बहेलियै माथै किरोडू सज्जन आदमी न्याछावर करदू। पण दूजो चरण वैनै ऊकल्यो कोनी जणै पृथ्वीराजजी वै री पूरती करी –

'रजनी का भेळा किया वेह का अच्छर मेट।

मतलब वो दुरजन इसो हा कै जिकै चकवै–चकवी नै रात नै भेळा कर र विधाता रै लेख नै मेट दियो – अणहुणी नै हुणी करदी।

सज्जनसिंह पीथळ रा कइ कवित्त लोकजीवन मे इत्ता रच–पच गया है कै वूढा–बडेरा कैवता ई रैवै पण वानै लिखारै रै नाव रो पतो कोनी। क्यू चतरसिंह तनै ध्यान है नी दादीसा सपाडो करण पधारता जणै न्हावण सू पेली गुणगुणावता जावता –

काया लाग्यो काट सिकळीगर सुधरै नईं।

निर्मल हाय निराट था भेट्या भागीरथी।।

दुलेसिंह गगा रो महातम दरसावण सारू ओ पृथ्वीराजजी रो कैयोडो ई कवित्त हे।

चोधरी लखदाद है इये ज्ञान ने बूढा–बडेरा कनै बेठा जणै ओ ज्ञान री बाता सुणण मे आवै।

दुलेसिंह आज रै इयै आपाधापी रै जुग मे ज्ञान री बाता सुणण री फुरसत कैनै हे चोधरी ? आजकाल तो थारी–म्हारी करण मे ई दिन बीतै।

चौधरी साची है ठाकरा आज री पीढी तो बूढै–बडेरा नै घर मे बोझ समझै ठाकरा आप अबार रहीम खानखाना रो नाव लियो ओ ई दूहैआळो ही रहीम हे नी –

मागन गया सो मर गया जो कोई मागन जाय।
उससे पहले वो मुआ जो होता ही नट जाय।।

दुलेसिह हा भाई चौधरी थे ठीक समझ्या। म्हैं वै रहीम री ई बात कर रैयो हो।

(उठतो बोले)

चोधरी राम–राम ठाकरा फेरू हाजिर होसू। जग म खाली राम रो नाव ई साचो है।

दुलेसिह राम–राम भाई।

(चोधरी वारै जावै अर औंकार आवै)

औंकार दादोसा आप माय पधारो खाणो ठडो हुय रैयो हे।

दुलेसिह उठ भाई सज्जनसिह चाल भई चतरू पेट नै तो भाडो देवणो ई पडसी।

(सगळा उठण री मुद्रा मे)

धीरे धीरै मच माथै अधारो

तीजो दरसाव

(माधोसिह री हवेली हवेली रो अेक कमरो कमरै मे दुलेसिह सज्जनसिह चतरसिह गोपालसिह माधोसिह महिपालसिह अर औंकार बैठा है)

दुलेसिह — हा भाई माधोसिह किया भेळा किया है म्हानै ?

माधोसिह — काकोसा आप लोगा नै इया कष्ट दियो है कै म्हैं लीक सू हट र अेक निरणे लियो है जिकै री छाया सगळ कुटुम्ब माथै पडसी। म्हैं निरणे लियो हे कै हूँ सालू रो पुनरब्याव करसू

(बीच मे बोलै)

सज्जनसिह — पुनरब्याव अर अे हवेली मे ? थारो माथो फिरग्यो काई ? इसी माडी वात कैवता थारी जीभ रा टुकडा को हुयग्या नीं ? म्हे मरा अर मारा पण आ माडी बात म्हे आज हुवण दा ना काल

(बीच मे बोलै)

चतरसिह — आ ऊधी बात थारे खापडै मे आई किया माधोसिह ? तू भाग खा राखी है काई ?

माधोसिह — म्हें सोच–समझ र अर होस–हवास म ओ निरणे लियो हे। आप लागा री वात मे आय र म्है म्हारी सालू री जिदगी खराब तो कर दीनी पण अबै म्हैं कैरी ई को सुणू नी।

चतरसिह — जद थें ब्याव करणे री त ई कर लीनी है तो म्हाने अठे म्हारो अपमान करणने बुलाया हे ?

(बीच मे बोलै)

गोपालसिह — सज्जनसिह भाइसा आप हर टम वडेपणे री तलवार

काढ्या मत बैठ्या रैया करो माधोसिह थें परिवार नै भेळो कर र सेणी बात करी।

दुलेसिह — देखो भाई भेळा करिया है तो अेरी बात भी सुणो। माना हा कै माधोसिह था सगळा सू छोटो हे पण वो टाबर कोनी टाबरा रो बाप है। आपा सगळा रो मान राखै।

सज्जनसिह — चतरसिह चाल छोड आ ने अे पढ्या–लिख्या रसे अेक है अर अेको कर राख्यो है। तू अर हूँ तो आरी नजरा मे गवार अर अणपढ हा। चाल आपणी हवेली चाला।

गोपालसिह — भाईसा टाबरा दाई बाता मत करो। विराजो अर आगलै री बात सुणो। परिवार री परम्परा मे अेक नुई बात हुवण जाय रैयी है आप लोगा री राय लवणी जरूरी है। आपा बात रो गुणदोस देखसा सोचसा–समझसा। पछे आपा आपा री राय आगले नै बता देसा। मानसी तो ठीक है। आगै आगलै री मरजी। सगळा आप–आपरी न्यारी न्यारी गवाडी चलावे।

चतरसिह — म्हाने सीख देवण री जरूरत कोनी गोपालसिह थे म्हारा हुवता तो पेली बडी हवेली हाजिर हुवता अर सीधा अठे भेळा को हुवता नीं।

गोपालसिह — देखा भाईसा काल दुपेर मे म्हारे अर महिपालसिह कनै माधोसिह रो फोन आयो अर बात काई हे बा तो बताई कोनी पण घणैमान सू आवण री ताकीद करी। जणै म्हा दोनू जणा राय–मसविरो कर र सोच्यो के दो–दो गाडिया रा पेट्राल बाळण सू काई फायदा म्हे अक ई गाडी म अठे आयग्या।

महिपाल — रात ने माडा पोच्या सोच्या कै अेकाअेक आपरी नींद म खलल क्यू घाला दिनूगै दरसण करसा।

चतरसिह — हा महिपालसिह बिया इ थे मोटा आदमी हा म्हा तो दूर रा पावणा हा। गरीब भाया री सुध कुण लेवै

दुलेसिह — देखो भाई घरबिद री बाता ता हुवती रेसी मुद्दे री बात करा जिकै खातर भेळा हुया हा।

गोपालसिंह — आप ठीक फरमावो हो काकोसा। आपरी काई राय है बा बताओ।

दुलेसिंह — हूँ काई बताऊ बेटा। थे पॉचू भाई बैठ्या हो पढ्या–लिख्या हो सेणा–समझदार हो था दुनिया देखी है। हूँ तो अक इ बात जाणू हूँ कै काई माडी–मादी बात अर जगहसाइ नइ हुवे अर बडरा री पागडी नई उछ्ळै। हूँ तो पाचा रै सागै हूँ। म्हारै तो राणाजी थरपे जठैई उदेपुर। जमारै रै सागै तो चालणो पडसी। जे जीवतो रैवणो है तो पुराणी मान्यतावा भी छोडणी पडसी।

सज्जनसिंह — काकोसा गुडलिपटी बाता ना करो। राजपूता में पुनरब्याव हुया है काई ? जे अेक–आध गयो–गुजरयो ओ काम कर लियो है तो समाज म बैरी काई ओळखाण है ?

दुलेसिंह — देख भाई सज्जनसिंह दो माथा हुवै जिको थासू जिद करै। मनै अेक बात बता राजपूता म किता क बाल–विवाह हुया हे ? सगळा मोटा टाबर कर र परणावै पण था दोनू भाया री मूरख–जिद रै लारे माधोसिंह आपरी दस बरसा री बेटी रो ब्याव कर दियो। बेरी गुवाडी उजडगी अर थे नाक री बाता करो ?

चतरसिंह — आप पचायती करण पधारिया हो काकोसा या

दुलेसिंह — हूँ थारै घर मे पचायती करणआळो कुण हूँ, बटा। थे पॉचू भाई बैठ्या हो। आगो–पीछो फरू सोचलो। मनै तो बुलायो जणै आयो हूँ। बाकी फदडपच बणण री म्हारी आदत कोनी।

माधोसिंह — काकोसा आप रो पधारणो म्हारे सिरमाथ पर हे। घर री समस्या आपरै सामे नीं राखसा तो केरै सामै राखसा ? अबे दाता तो मसाण सू उठ र आवण सू रैया। घर रै बूढे–बडेरा म आप इ बिराजो।

दुलेसिंह — ओ थारो बडपण हे कै थ मने घर रो बडेरो मानो हो।

गोपालसिंह — काकोसा म्हे तो सगळा ई आप नै बडा ई मानां हा अर आगे ही मानता रैसा।

महिपाल देखो भाईसा सगळा ई सुणलो इया छोटी-छोटी बाता माथे उखड्या काम चालै कोयनी। माधोसिह री बात मे वजन तो है। ब्होत गम्भीरता सू सोचणआळी बात है।

गोपालसिह रूढिवादी परम्परावा सू किता क दिन चिप्या बैठा रैसा ? जमानै री चाल देख र अे बन्धन ढीला करणा पडसी।

दुलेसिह जमानै रै सागे चालसा जद ई जीवारी हुसी। घणो माडो बगत आयग्यो। आजकाल रा चाळा देख र म्हारो तो खून खोल जावै। आख्या देखा हा चोर-चपाक दाई ढाटा मारयोडी छोरया फर्राटै रै सागै स्कूटर-मोटर साइकिला माथै चढ्योडी इनै सू बिनै भागती फिरै। मा-बाप किसा जाणै कोनी ? क्यू आख्या मूद राखी है ?

गोपालसिह आजकाल री पौध मा-बाप री सुणै है काई काकोसा ? घर-घर झाको ओ ई लेखो

(बीच मे बोलै)

महिपाल घणो केवो तो कुवा-खाड री खबर मिलसी या पखै रै हुक मे लटकोडा लाधसी। बरदास्त करण री तो खिमता ई खतम हुयगी।

दुलेसिह अबै काई कैवा बेटा म्हारी बगत मे तो चोर-धाडेती आपरी पैचाण छुपावण खातर मूढै माथे ढाटा बाध र अपराध करता।

गोपालसिह साची है काकोसा देश री कानून-व्यवस्था रो ढाचो चरमरायग्यो कैरी-केरी बात करा कुवै ई भाग पडगी।

दुलेसिह थोडी घणी ऑख री सरम बची ही जिकै रो पडदो आ टीब्या धीब्या सू हटग्यो बेटा घर घर टेलीविजन

महिपाल आ आथूण देशाआळा री आपणी सस्कृति ने भिस्ट करण री सोची-समझी चाल है। अेक षड्यत्र हे काकोसा जिके रे जाळ म आपा गळे ताई फसग्या अर ठाकर खाय र इ चेता कायनी।

गोपालसिह जे कोई कसर रेगी तो इये मोबाइल फोन पूरी कर दी। ससार नै प्रगतिसील अर समृद्ध बणावण नै विज्ञान अेरो

इजाद करयो पण इयै उन्नत टेक्नोलोजी रो जम र दुरुपयोग हुवण लागग्यो कई कई घरा मे सात सात आठ आठ मोबाइल अर कॉलेज रै करीव करीब हर टावर कने ओ खुणखुणियो है। अवे के वेरो लागे कै कुण केनै फोन करे कठै फोन करै ?

महिपाल काकोसा आप आ कैबत सुणी कोनी के 'देखा देखी बधे कोढ छीजत काया बधत रोग । मोबाइल रो गिफ्ट दाई आदान–प्रदान हुवण लागग्यो कठै–कठै चौकसी राखसा ?

माधोसिह समाज मे पनपती इसी विकृतिया अर गिरावट नै देख'र कुण भलो आदमी डरसी कोनी ? म्ह आ निरणे ओ खातर ई लियो है काकोसा क्यूकै और मनै कोई चारो दीखै कोनी।

सज्जनसिह समस्या गभीर तो है पण परम्परावा री जड भी ब्होत गैरी है काकोसा। उखाडता जोर आसी चक चक हुसी।

माधोसिह छोटे मूढे बडी बात साभा तो को देवैनीं काकासा पण केवणी पड रैयी है। कामना री पूरती तो मनुष्य जात नै करणी पडै है। जे कोई माई रो लाल जोर–जबरदस्ती कर र बा ने रोकण मे समर्थ हो जावे तो मौको पा र कामनावा वासना रो उग्र रूप धारण कर र परमाणु–विस्फोट बण जावै। ई वार्स्त भलो तो अैम ही है कै कामनापूरती नै धरम रो जामो पैरा दियो जावै।

दुलेसिह थारो सोचणो अर कैवणो ठीक हे माधोसिह विधवा रै धरम निभावण री बात तो सास्त्रा मे लिखी है पण पुनरब्याव करणा अधरम हे – आ कठैई म्हैं तो पढी कोनी। अर समय सारू समाज री सरचना मे बदळाव आवे ही हे।

सज्जनसिह बात तो थारी अर माधोसिह री केवाडी समझ म आवै है काकोसा पण समाज रो भी ध्यान राखणा पडसी।

महिपाल भाईसा किसे समाज री बात करो हो ? समाज लूठै आगै तो लिलडा गावै अर लुळ–लुळ र सलाम करै अर गरीबा माथे काठी करै। आपा नै तो आपा रै घर रो भलो सोचणा है।

(ओकार आवै)

गोपालसिह — आज रो टेम देखता समझदारी अेमे ई हे काकोसा कै टावर रो पुनरव्याव कर देवणो चाइजै।

सज्जनसिंह — था सगळा ई सोच लियो पण सालू वेटी नै गळी मे परणासो काई ? समाज म इसो टावर कुण हे जिको अेक विधवा लडकी सू व्याव करणनै राजी हुसी ? लाग्या हो पचायती करणनै।

दुलेसिह — भाई आ समस्या तो सामे दिखे ही है भले घर रो टावर तो दूढणो ई पडसी

औंकार — टावर म्है बताऊ दादोसा।

दुलेसिंह — कुण है लडको अर काइ करे है ?

चतरसिह — हासी कोइ गयो–गुजरयो अैरै ई माजने रो।

औंकार — काकोसा विना देख्या–भाळ्या केरोई माजनो ना बखाणो। लडका जनरल भवानीसिहजी राणावत रो इकलोतो वेटो है अर जोधपुर म डाक्टरी री पढाई कर रैयो हे। थारै–म्हारै जिसा इज्जतआळा वारै अठे पाणी भरै।

सज्जनसिंह — औंकार ! छोटा–वडा रो थोडो ई लिहाज कोनी ? म्हारै वैठ्या तू पचायती करणआळा कुण हे ?

चतरसिंह — भाइसा लडकै मे जरूर काण–कसर अर कोई अेव हुसी नई ता जनरल सा व नै टावरा रो काई घाटा हे।

सज्जनसिंह — साची कैवै तू, वडै घरा री वडी वाता। देखा काकोसा था लोगा रा फैसलो म्हा लागा नै विलकुल ई मजूर कानी। अगर था म्हारे उपरियाकर काइ माडा–मादा काम करिया तो थे थारै अर म्हे म्हार। चाल उठ चतरसिंह।

चतरसिंह — चाला भाइसा। इया लागे जाण सगळी दुनिया म खाली माधासिंह री वेटी ही विधवा हुई हे।

(सगळा बेठ्या थका सागै ई वाले)

चतरसिह

(कुछ क्षण रो सरणाटो)

(मच माथे अन्धारो)

चाथा दरसाव

(माधोसिह री हवेली अेक कमरै मे माधोसिह माधोसिह री घरआळी अर आकार बठा ह। सिरेकवर रोवती बोलै)

सिरेकवर — मनै आ ठाह हुवती कै आ जायोडी म्हारा इया काळो मूढो करा दसी ता म्हे जलमता ई बेनै टूपो दे देवती।

आकार — जे टूपो देर मारणा ई हे तो पैला म्हारै बाबोसा अर चतरसिह काकोसा रो गळो टूपो काकीसा। सगळी राड री जड बठैई है

(बीच मे बोले)

माधोसिह — बा रो म्हारै आगै नाव ई मत ले बेटा। कसूरवार तो म्ह हूँ। जे म्हे थोडा–सा पग रोप लेवता तो बै म्हार उपरियाकर सालू रो ब्याव थोड़ो ई कर देवता। काळा मूढो हुय र नाक तो म्हारी कटी है।

ओकार — आ बात सगळो गाव जाणे हे काकोसा क माधोसिह री घर मे अेक को चाली नीं अर भाया रै दबाव सू बेटी नै परणा दी। जठै ताई नाक कटण री बात है आप सू पली बा री नाक कटी है। बा री नाक लाबी घणी ही।

माधोसिह — नाक अबै कैरी ई कटा बटा। गवाडी ने कलक तो लाग इ गया।

सिरकवर — जवाइसा रै गुजरणे रे बाद बा अक दिन इ हवेली सू बारै पग को मेल्यो नीं अर आज तीन दिन हुयग्या सालू रा काइ ठाड–ठिकाणो कानी। काई ठाह बा जीवे है या मरगी ?

माधासिह — अबै तो वैरे मर जावण म इ आपणो भला ह। अबे या जीवती आपणे काई काम री ? अ खातर रो रो र क्यू आख्या खराब करो हो ? अबै बा पाछी तो आवण सू रैई।

सिरेकवर अबै तो बा पाछी आ जावै तो टुकडा कर नाखू बै रा। अबे घरै बैठ्या काई करो हो ? कुई खोज–खबर तो करो आखिर बा गई कठै कैरै लारै भागी है ?

(बीच मे बोलै)

औंकार गाव मे तो कोई इसो लूतरो छोरो कोनी काकीसा फेरू हवेली सू सगळा डरपै।

माधोसिह समझ मे तो आ को आवै नीं कै वैनै जमीं खायगी या आभो गिटग्यो।

सिरेकवर आप थाणै मे जा र रपट करावो क्यू नीं ?

माधोसिह थाणे म कोई आवणो हे ना जावणो। बठै तो सूती गगा बैवै है अर जिका नै अे बात री ठाह कोनी बा नै ई ठाह लाग जासी। थाणै मे जा र तो थाळी बजावणी है।

सिरेकवर हमैं आ बात किसी छिपी रैगी दिनूगै लिखमोजी रा मा आया कैवण लाग्या – तीन दिन हुयग्या सालू बेटी नै देखी कोनी। ननाणै गई है काई ?

माधोसिह बा नै घणा मूढै मत लगाया करो। बै तो घर–घर सोसा लेवता फिरै।

ओंकार काकीसा बा नै पूछता तो सरी के थारे बेटे री बहू कठै गयोडी हे ? धणी हुवता ई जगै जगै धूड खावती फिरै।

सिरेकवर औंकार बन्ना लोगा नै डूगर बळती दीखै पगा बळती को दीखै नीं।

माधोसिह दूसरा री रामायण बन्द करो। म्हारै तो आ समझ मे को आवे नी कै बा इत्ती समझदार हुय र ई ओ कदम उठाया किया ?

(बारै कानी सू बन्दूका लिया सज्जनसिह अर चतरसिह आवै। सिरेकवर माय जावै)

सज्जनसिह माधोसिह माडी बात हुवणी ही जिकी तो हुयगी। म्हानै बता के थारो शक कैरै माथे है ?

माधोसिह क्यू, बा मनै पूछ र भागी है ? आप–आपरै घरे पधारो अर म्हनै साती सू जीवण दो। नाक कटणी ही अर

काळो मूढो हुवणो हो जिको हुयग्यो। अबै पडिया बन्दूका लिया फिरता रेवो। अबै क्यू जगहसाई करावो हो ?

सज्जनसिह — अबे लारली बाता नै छोडो माधोसिह अर ओ पतो लगाओ कै आखिर सालू बेटी गई कठै ?

माधोसिह — अबे म्हारी बला सू बा दड म पडो। तेली सू खळ ऊतरी हुई बळीतै जोग। आप लोग घरै पधारो अर म्हानै म्हारै हाल माथे छोडदो।

सज्जनसिह — देख माधोसिह थारै सू घणा तो म्हे सरमिन्दा हा। म्हारी मत मारीजगी ही जिका म्हे लोग माजी री बाता मे आयग्या अर माजी अजे ताई जीवता बैठ्या है। म्हारी जिद रै लारे ओ खेलो हुयो है।

(बारै सू पुलिस इसपेक्टर आवै)

माधोसिह — थाणेदार सा ब आप ?

सज्जनसिह — काई बात है थाणदार सा ब किया पधारया ?

इसपक्टर — म्ह क्षमा चाऊ अेक बडो दुख रो समाचार लेय र आयो हूँ।

माधोसिह — काई ?

(माथे सू टोपी उतार र)

इसपेक्टर — दुख रै सागै कैवणो पड रिया है के गाव री काकडआळे कुवै सू अेक ल्हास बरामद हुई है। बेरी पिछाण आप री बेटी रे रूप म हुई है।

चतरसिह — काइ कय रैया हो थे थाणेदार सा ब ?

इसपेक्टर — अर लडकी रै हाथ म आ चिट्ठी बरामद हुइ है।

(इसपेक्टर माधासिह रै हाथ म चिट्ठी झलावै। माधोसिह चिट्ठी पढण री मुद्रा मे खडयो हे। नेपथ्य सू गीत बाजै)

गीत — छोटी–सी उमर परणाई हो बाबोसा
काई थारो करिया म्हैं कसूर
इतरा दिना तो म्हारै लाड लडाया

अब क्यू करोसा म्हानै दूर
थारै पींपळियै री भोळी म्हैं चिडकली
थे चावो हो तो उड जाऊ सा
म्हैं तो बाबोसा थारै खूटै री गावडली
टोरो जठै ही दुर जाऊ सा
भेजो तो भेजो सा मरजी है थारी
सावण मे बुलाइज्यो जरूर

छोटी–सी उमर

था घर जलमी था घर खेली
अब घर भेजो दूजे
आगै बधू तो पग पाछा पडै म्हारा
काळजियो थर थर धूजै
मूढै सू काई बोलू, म्हारा आसूडा बालै
हिवडो भरियो हे भरपूर

छोटी–सी उमर

सग की सहेलिया आओ
आपा गळै मिलला फेरू कद मिलणो हा पावला
भाई भाभी मावडली सू जाप म्हैं बिछडक
ऑखडिया म्हारी रावे सा
काई करू म्हानै तो निभाणो पडेगो
दुनिया को दस्तूर।

छोटी–सी उमर

धीरे धीरे मच माथै अधारो

पाच सौ रो नोट

पहलो दरसाव

(मालीराम चित्रकार रो मकान। मालीराम माचै माथे बैठो है। कमर मे दो–चार तस्वीरा पडी है। अेक तणी माथे कपडा टग्याडा है। कमरो उथळ–पुथळ पडियो है। बादळ गरजै बिजळी चमकै अर बिरखा बरस री है। मालीराम टेपरेकार्डर बजावै। थोडी देर मे पुलिस री सीटिया बाजती सुणीजै अर घर म कैरै ही कूदणै रो धमीड सुणीजै। मालीराम डरतो मूढै माथे रजाई नाखलै। थोडी देर रो सरणाटो। फेरू मालीराम अेकलो बोलै)

मालीराम कुण हरि बटा आयग्या तू ? तने कित्ती बार बोल्यो हूँ कै रात बिरात टम सू घर म बड जाया कर पण तू आधे बाप री कद सुणे ।

(चोर चुपचाप खड्यो मालीराम री बाता सुणै। मालीराम फेरू बोलै)

मालीराम कठै है हरिराम ? काई करण लागग्यो ? इनै आवै कोनी काई ? बिरखा मे सगळो भीजग्यो हुसी। जल्दी सू कपडा खोल अर तणी माथे लुगी टगरी हुसी लपेट लै अर म्हारे कनै आ र रजाई मे बड जा। जे भूखो हे तो रसोइ म डबल रोटी पडी हुसी चाय बणाले अर खायलै। म्हार सू तो अबै उठीजै कोनी बेटा। आख्या हुवती तो फेरू ई कीं हिम्मत कर लेवतो।

(चोर डरतो–डरतो मालीराम रै कने आवै)

काई बात हे बेटा ! बालै कोनी ? इत्ते दिना सू आयो हे फेरू ई नाराज हे म्हारै सू ? थारी मा अधबैयी मे सागा छोडगी। बेटी भीखली आपरै सासरे गई अर तू घर

छोड र भाजग्यो। फेरू सोचू, सगळो कसूर म्हारो ही है। रोज दारू पीवणो बेटा अर रोज थारी मा नै कूटणी। जद ताईं दो–तीन गदीड वैरै नईं मार लेवतो तद ताईं म्हारै दारू चढती ई कानी। तू दस साल रो हो तो ई थारै कनै सू दारू मगवातो। थारी मा रै अर म्हारे अै बात री लडाई हुवती के थे टाबरा री आदता बिगाडो। आखिर वा बात ही हुई अर तू छोटी–सी उमर म दारू पीवणी सीखग्यो।

म्हैं हाथ रो चित्रकार पण दारू री लत सू खराब हुयग्यो अर सगळी चित्रकारी भूलग्यो।

थारी मा रै मरिया पछै मैं रो–रो र आख्या फोडली। आख्या फूटया पछै सगळी आदता आपेई छूटगी। आदता काइ छूटगी राटी पाणी रा ही लाला पडग्या अर अेक–अेक कर र घर रो सगळो सामान वेच दियो। कोई अेक–आध तस्वीर इनै–विनै पडी है तो ई मनै ठाह कानी। भीखली ने चोखा घर देख र परणाई पण जवाई भी दारूडो निकळ्यो रोज पीवै अर रोज बापडी भीखली ने मार–कूट र घर सू काढदे। भीखली रावती आवे पण म्हैं बैने समझा बुझा र पाछी वै कसाई कनै भेजदू। आ सोच र के *वठै वा मार ही तो खावै पण रोटी–भूखी तो नीं रैवै।* हमकी ता कई दिन हुयग्या भीखली आई कोनी। काईं ठाह जीवे है क मरगी। अबे कुण जा र वैरी ठाह करै।

(मालीराम इनै–विनै हाथ फेरै)

अर! कठै गयो बटा? पाछा गया या बोल कोनी? हाल ताइ नाराज हे म्हासू? देख बेटा म्हैं तने छोटेथके न मारतो तू हम मन मारले। ओर तो काईं करू बता?

(मालीराम उठै अर बाल्टी सू ठोकर खाय र पडै)

चार — म्हने माफ करदे बापू। अबे म्हैं तनै अेकलो छाड र कठेई नीं जाऊ। अबकी अबकी माफ करदे।

मालीराम — नईं नईं मत रो हरि बेटा। दिनूगे रो भूल्या सिज्या नै घरै आ जावै तो वैनै भूल्यो नीं केवे। जा पैला तू अै आला कपडा खोल नईं तो अबार छींक्या खावणी सरू कर देसी।

(चोर हाथ मायलो थेलो इनै–विनै देख र अेक खुणै मे लुकोवै अर पेट खोल र लुगी लपेटै।)

चोर लागी तो कोनी बापू ?

(हसतो बोलै)

मालीराम अबै तो पड–पड र पक्को हुयग्यो बेटा। आयै दिन पडू अर गोडा फोडू, पण करू काई छोटै मोटै काम खातर उठणो ई पडै।

चोर तो इ थोडो ध्यान राख्या कर नई तो कदैई हाथ पग टूटग्या तो मुस्किल हुय जासी।

मालीराम ध्यान तो घणोई राखू बेटा पण लाइट जाया सू थाडा–घणो चिलको पडै वै सू ई जावू परो।

चोर *लाइट कण गई बापू ?*

मालीराम कणे ही गई बेटा। आज तो विरखा रो वहानो है नईं तो ई दिन म बीस बार जावै अर बीस बार आवै।

चोर अे लाइट रो तो सगळे ई लफडो है बापू। जणै देखो जणै कटोतीअर बिजळी रो बिल आवै बित्तै रो बित्तो।

मालीराम देख रसोई मे डबलरोटी पडी हुसी अर छींकै मे अचार।

चोर रोटी तो म्हें खाय र आयो हूँ, बापू।

मालीराम *अरे ! क्यू झूठ बोलै है आधे बाप सू। अबै अे बरसते पाणी* मे किसो होटल खुलो है ? थाडा–घणो कीं खायलै बेटा नई तो भूखै नै नींद

(बीच मे बोलै)

चोर थारी सोगन बापू, रोटी म्हें खाय र आयो हूँ।

मालीराम तो चाय बणाले दा गुटका म्हैं ई ले लेसू।

चोर दख बापू, म्हारी तो बिल्कुल इच्छा कानी। तू केवे ता म्हैं थारै खातर चाय बणा र ला दू।

मालीराम अरे नई रै बेटा मनै तो इया ही रातनै नींद को आवैनीं। फेरू नींद बच र ओजको क्यू मोल लू। जा माचो उठा *ला अर म्हारे कनै ई आय र सूयजा। माय तो गरमी मर*

जासी। पखो तीन महीना सू खराब पड्यो है। कुण ठीक करावै ? अठै तो खावण रा ई टोटा है। पखै रा पइसा कठै सू लावतो ?

(मालीराम हसै)

चोर क्यू हस्यो बापू ?

मालीराम पखै रै हाथ पौंच्यो कोनी बेटा नईं तो पखो ई बेच

(बीच मे बोलै)

चोर थारो भी जवाब कोनी बापू।

(चोर जमीन माथै चादर बिछा र आडो हुवै)

मालीराम अरे नीचै ई सूयग्यो बेटा ?

चोर कमर मे दरद है बापू। नीचै सूया कमर पाधरी हुय जासी।

मालीराम काईं हुयो कमर मे ? कठैई पडग्यो हो ?

चोर इया ही दुखण लागगी। आपैई ठीक हुय जासी।

मालीराम नईं तो दिनूगै लूण रो सेक कर लिये। हाडी मे घणोई पड्यो है। *(हस र)* लूण नै कोई ऊदरा खावै ना कीड्या।

(घडी रा घटा सुणीजै)

चोर सूय जा बापू, रात रा तीन वजग्या।

मालीराम इत्ती जल्दी तीन बजगी ? बाता ई बाता मे बेरो ई नीं पड्यो। नईं तो ढाई बज्या ताईं तो नींद ले र धाप जाऊ अर पसवाडा फोरतो दिन उगाऊ। *(चोर बीडी जगावै)* ओ चानणो क्यारो हुयो है हरि बेटा ?

चोर बीडी सिलगाई है बापू। बीडी पीसी बापू ?

मालीराम पीवण री तो इच्छा हुवै बेटा पण कपडा बळण रो डर रैवै। *(हसतो बोलै)* अेकर दिन मे बीडी बाळी अर सगळा गूदड बाळ लिया। पैला तो बेरो ई नीं पड्यो फेरू कपडा बळण री बास आई जणै दोरो–सोरो उठ्यो अर बाल्टी रो सगळो पाणी माचै माथै ऊधा दियो। फेरू ई किसी बास आवणी रैय जावै। पछै ठा लागी कै माचै कनै पडी गिद्दी

बळती ही। बीं नै बुझाई–बाळी। बै दिन पछै बीडी पीवण सू तो लारो छूटग्यो।

चोर सूयजा बापू। मनै अबै नींद आवै।

मालीराम अब बालता ई रैसा तो नींद किया आसी बटा।

चोर सूयजा दिनूगै बाता करसा।

मालीराम दिनूगै–सिज्या म्हारै कनै तो बाता ही बाता है। और बैलो पड्या करू ही काइ ? देख पाणी रो लोटो म्हारै सिराणै पड्यो है तिस लागै तो पी लिए अबै तू रोटी तो खाई कोनी। तिस कठे सू लागसी थारी मावडकी जीवती ही जणै री बात है – थारी मा बोली कै आज निरजळा ग्यारस है। आज आज दारू ना पीया अर ग्यारस करलो। काइ ठाह बै दिन म्हैं थारी मा री बाता म किया आयग्यो अर बरत राख लियो। अबै दिन–भर गिटण आळै आदमी सू किया भूखो रैईजै अर बरत किया हुवै ? अर ऊपर सू वा गरमी बस मरिया कोनी पण बाकी कीं रैई कोनी। दिन तो दोरो–सोरो काढ लियो पण रात्त अबै किया कटै। थारी मा नै तो नींद आयगी। म्है होळै–सी उठ्यो अर बोतल खोलली। दो तीन पग लिया अर ब्राह्मणा नै गाळ्या काढण लागग्यो। बारा महीना में बयासी त्योहार आदमी नै सास ही को लेवणदे नीं। पाच पइसा कने भेळा हुवै अर आज ऊभ छठ काल बच्छ बारस परसू तेरस थारी मा री आख खुलगी। वा सूती सूती बोली–जागग्या काई ? काई कर रिया हो ? म्हैं बोल्यो–बरत खोलू

(दानू कई देर हसै)

चोर अरे बापू, तू मनै सूवणदै कोनी ?

मालीराम सूयजा–सूयजा। इया ई बात्त याद आयगी रे। सूयजा बेटा हमै को बोलू नीं। लागै बिरखा बन्द हुयगी। कद बरसण लागी ही। अबकी जमानो तो सागीडो ई हुसी कैवै है नी कै अणभागी खेत बा वै तो काळ पडै या बैरो बळध मरै। म्हैं लारलै सू लारलै साल खेत बा यो अर बिरखा नै उडीकतो रैयो। पण बिरखा किसी बरस जावै!

कोई चार साला सू काळ पड रैयो हो। लोग बापडा घणा ई कीरतन–जागरण करिया यज्ञ करिया पण इन्दर भगवान राजी नीं हुया। अर हमकी खेत नीं वा यो जणै विरखा ई घणी हुई है। पण हमैं खेत या वणनै टका कठै ?

चोर बापू, तू सूवणदै कोनी ? रात रा तीन बजग्या।

मालीराम हा–हा सूयजा बेटा। तू दिन–भर रो थकोडो हुसी अर म्हैं तो इया ई माचै माथे पड्यो माचो तोडू–रात नै अेकर पडतै ई थोडी नींद आवै फेरू जाग जाऊ अर इनै–बिनै रा विचार करतो रैऊ–बतळाऊ तो हुकारो कुण देवै। थारी मावडी जीवती ही जणै तो या थोडी खासी करतो तोई उठ र वैठ जावती। चाय–पाणी रो पूछती अर टाबर रै माथै पर हाथ फैरै ज्याई म्हारै ई माथे पर हाथ फेरती हाथ–पग दावती। कदैई–कदैई दाबती–दाबती बापडी म्हारै पगा मे ई सूय जावती। पण हमे रोया सू काई टक्का बटै–खुद रै हाथा सू ही म्हारै पगा माथै कुवाडी मारली। बापडी नै अेक दिन ई सुख सू जीवण दी कोनी। हमैं राऊ हूँ, वैरी याद कर–कर। रोऊ म्हारै बाप नै हमैं मनै रातनै खाँसी आवै न म्हारा हाडका टूटै अर टूटै तो दबावै म्हारो बाप

चोर अरे बापू, तू सूवणदै कोनी ?

मालीराम अरे सूयजा बेटा। थारी सौगन हमैं को बोलू नीं–हमैं बोलू तो तू म्हारो

चोर बापू

धीरै धीरै मच माथे अधारो

दूजो दरसाव

(मालीराम रो मकान। मालीराम माचै माथै बैठो है। कमरो पैला दाईं पड्यो है। चोर नुवा कपडा पैर र आवै।)

मालीराम — कुण ? हरि बेटा !

चोर — हा बापू, काई बात है ? क्यू हेलो मारियो ?

(मालीराम अेक नोट हाथ मे ले र)

मालीराम — देख ओ नोट कित्तै रो है ?

चोर — नोट तो दस रो है बापू। पण करणो काईं है नोट रो ?

मालीराम — देख घर सू निकळताई सब्जी री दुकान है तनै भावै जिको साग लिया अर पींपै मे देख आटो कित्तो क है ? नई हुवै तो दो चार किलो आटो ई ले आये।

चोर — ओ नोट थारै कनै रैवणदे। पइसा है म्हारै कनै। आ बता कै आटै रै अलावा और काईं लावणो है ?

मालीराम — गळी मे कादो कीचड हुसी। नइ तो म्हैं इ जा र लेय आवतो।

चोर — अेक बात पूछू, बापू ?

मालीराम — अरे दो पूछ नी बेटा। बोल काईं बात है ?

चोर — तनै आख्या सू दीखे कोनी तू राटी–वीजी किया बणावै ?

मालीराम — अबे आंधे आदमी सू रोटी तो किया बणै बेटा। आ बात तो तू ही जाणे है। पण मरतो आदमी काईं करै। पाणी मे डूबतै आदमी दाईं हाथ पग मारणा ही पडै।

चोर — म्हैं समझ्यो कोनी बापू।

मालीराम — अरे बेटा पैला पाणी रो लोटो भर र कनै राखू। फेर परात म आटो घालू अर पींपै नै पाछो ढक र राखू। जे कदैई

आटै रो पींपो ढकणो भूल जाऊ तो दिनूगै आटै री जग्या पींपै माय सू वडा वडा ऊदरा निकळ र बारै भागै।

(*मालीराम जोर सू हसै*)

चोर काई हुयो बापू, क्यू हस्यो ?

मालीराम अरे वेटा ! पींपै मे ऊदरा बड तो जावै पण बा सू पाछो निकळीजै कोनी अर रात–भर खडबड–खडवड करता रैवै। दिनूगे म्है आटो काढणनै पाछो पींपै मे हाथ घालू जणै म्हारै हाथ माथै चढ–चढ र पींपै सू बारै भाजै।

(*मालीराम हसै*)

चोर फेरू क्यू हस्यो बापू ?

मालीराम आटै मे हाथ फेरू जण आटै म आधाआध ऊदरा री मींगणिया निकळे। अब राज रोज आटो कसू छाणीजै बेटा अे खातर होवै ज्यू ई आटो गूध लू अर दो जाडा जाडा रोट तवै माथै सेक लू। अेक दिनूगे खाय लू अर अेक सिज्यानै।

चार अर साग–बीजा ?

मालीराम अवै साग वाग तो रोज कुण वणावै बेटा। मुट्ठी सू कादो भागू अर दो कवा ले लू अर घणी हुवै तो कदैई लूण–मिरच सू रोटी खाय लू। ओ म्हारै रोज रो धन्धो है। अै खातर कोई दोरो नीं लागै आदत–सी पडगी।

चोर पण बापू, तू चूल्हो किया जगावै ?

मालीराम अेक तो म्हें तूळिया री पेटी रोज ठावी राखू बटा फेरू अेक थेपडी माथै मिटिया तल नाख र चूल्हो जगाय लू।

चोर अर बापू, तू न्हावे किया अर थारा कपडा कुण सुखावै ?

मालीराम रोटी बणावण रो तो कदेई कदइ आळस कर जाऊ बेटा पण न्हाऊ रोज हूँ।

(*मालीराम जोर सू हसै*)

चोर काई हुयो बापू ?

मालीराम अेकर न्हावणनै बैठ्यो अर न्हा र अगोछो अर कछियो

जोऊ गीलो धोतियो पैस्या सगळै घर मे फिर लियो पण गमछो अर कछियो किसा लाध जावै। फेरू वाल्टी कनै हाथ फेर्यो तो लखायो कै वै म्हा सू पैला ही न्हा लिया। दोनू वाल्टी कने भीज्या पड्या हा। अवै कद कछियो सूखै अर कद पैरू। कछियो नई सूख्यो जित्तै आलो धोतियो पैस्या आगण म फिरता रैया।

(चोर हसै)

चोर वाह वापू, तू आधो हुय र ई कित्तो खुस रैवै है।

मालीराम अवै काई करू बेटा दुख कर्या हुवै भी काई ? अेक तो आधो अर दूजो बुढापो। आख्या रा आसू तो कदैई रा सूखग्या। अवे तो रोवणो चाऊ तो ई आसू को आवैनीं।

(मालीराम हसै)

चोर फेरू काई लाधग्यो वापू ?

मालीराम अेकर कछियै रो नाडो माय वडग्यो। अवै नाडो कछियै माय सू कुण काढै ? वै दिन थारी मा व्होत याद आई बेटा। वेकसूर गरीवणी नै म्हैं कूट-कूट र मार नाखी। घर री नौकराणी नै ई वेमतलव गाळ को काढीजै नीं बेटा पण परणीज र लायोडी जोडायत नै लोग नौकराणी सू ई नीची समझै। वमतलब गाळी गळोज मार-कूट। अवै मरगी जण बाता याद आवै।

आख्या ही जित्तै तो हिम्मत राखी पण आख्या फूट्या पछै टूटग्यो। तस्वीर वणावणनै वेठू तो तस्वीर में थारी मा दीखण लाग जावै। अवै भूखा मरण रा दिन आयग्या। सिज्या पडता ही पीवणन हाडका टूटै-अेक अक करता घर रो सगळो सामान बेच नाख्यो। अवै बेचणनै कीं ई रैया कोनी। तीन दिना रो भूखो। माग र खावतै नै सरम आवै अे खातर बै दिन मरण री पक्की साचली। वारणा ढकण लाग्यो कै भीखली कूकती घर मे आयगी। बै आपरो डील उघाड र बतायो। भीखली री दसा देख'र म्हैं मरणो तो भूलग्यो अर कुवाडी ले र जवाई नै मारणनै भाज्यो। पण सागी टेम भीखली आय र खसम माथे पडगी। नई तो बै

दिन जवाइ रा टुकडा कर नाखतो। कुवाडी नाख'र पाछो घरै आयग्यो अर माचै माथै आडो पडग्यो। पड्यो पड्यो सोच्यो कै बेटी नै मार खावती नै देखी तो जवाई नै मारणै भाज्यो पण थारी मा भी तो कैरी इ बेटी ही। दारू पी-पी र वापडी रा रोज हाडका भागतो अर मरगी जणै अबै रोऊ बाप नै। अबै वा सुपनै मे ही को दीखैनीं।

यै दिन भूखा मरतो माचै माथै पडग्यो। कोई पाणी पावणआलो ही कोनी। भाग सू अेक लुगाई आपरै दो टाबरा नै सागै लेय'र घर में आयगी अर कैवण लागी-बाबोसा अेक कमरो भाडै माथै देयदो। मनै तो राम मिलग्यो। वा दिनूगै सिज्या आपरै टाबरा नै खवाडै अर मनै ही दो रोटी घालदै। दोनू टाबर म्हारै मूढै लागग्या अर मनै नानो नानो कैवण लागग्या। वा लुगाई काम माथै चली जावती अर टाबर दिन-भर म्हारै कनै खेलता रैवता।

चोर अबै वा लुगाई कठै गई बापू ? मकान रो भाडो वाडो

मालीराम म्हैं गैलो थोडी हूँ बेटा जिको वै सू भाडो लेवतो। भाडै सू घणी तो वा वापडी म्हारी सेवा करदी।

चोर बताई कोनी बापू ? वा लुगाई हमैं कठै गई ?

मालीराम गई कठै बेटा। अेक दिन यै रो मोट्यार यै नै ढूढतो-ढूढतो अठै आयग्यो। लिछमी तो बोल दियो कै म्हैं मर जाऊ तो ही थारै सागै नीं चालू, पण वो गिडगिडावण लागग्यो लुगाई रै पगै पडण लागग्यो कै म्हैं जिदगी मे कदैई थारै अर दारू रै हाथ को लगाऊ नीं। अबकी-अबकी माफ करदै।

चोर तो वो हरामी भी दारूडो हो बापू ?

मालीराम जठै देखो अै जुलम दारू ही करावै बेटा।

चोर वा लुगाई पाछी कदैई अठै आई बापू ? (*मालीराम जोर सू हस्यो*) काई हुया बापू, क्यू हस्यो ?

मालीराम वा इत्ती बेगी पाछी किया आवै बेटा।

चोर म्हैं समझ्यो कोनी बापू।

मालीराम अरे बेटा बा काल दिनूगै ई तो अठै सू पाछी गई है।

चोर काल दिनूगै ही अठे सू गई है ? बै रो मोट्यार काम काईं करे है बापू ?

मालीराम अेक भुजिया री फैक्ट्री मे चोकीदार है।

चोर काई नाव है वै रो ?

मालीराम नाव तो म्हें पूछ्यो कोनी। सायद सावतो नाव है वे रो।

चोर पग सू बो थोडो खोडो है बापू ?

मालीराम हा बेटा पण तू बै नै कूकर जाणै हे ?

चोर आ अेक लाबी कहाणी है बापू। सावतो जिकी भुजिया री फेक्ट्री म काम करे बे मे अेक रात अेक चोर बडग्या अर तिजोरी तोड र भागण लाग्यो तद फैक्ट्री मे जाग हुयगी। चौकीदार चोर नै पकड लियो पण चोर रै जिन्दगी मौत रो सवाल हो। चोर चौकीदार रै पग मे चक्कू मार र बै नै घायल कर दियो अर वठै सू भाग छूट्यो।

मालीराम आ कहाणी तो तू इया सुणा दी बेटा जाणे बो चोर *(बात नै काटतो बोलै)*

चार अरे नईं बापू। म्है चोरी करता तो इया भूखा मरतो थोडो ही फिरतो ?

मालीराम तो आ बात तू कठै सुणी बेटा ? झूठ ना बोले। साची–साची बताये। तनै म्हारी सोगन है।

चोर देख बापू, म्हैं सोगन वोगन तो खाऊ कोनी पण हुयो इया कै बै फैक्ट्री मे अेक जवारियो नाव रो आदमी काम करतो। जवारियो बे चोर सू मिल्योडो हो। वै भागा–दौडी मे जवारियो गन्दै पाणी रै अेक कुड म पडग्यो। चौकीदार सेठ नै फोन कर्यो अर सेठ पुलिस नै। पुलिस आई जित्तै–जित्ते जवारियो बिना बयान दिया इ मरग्यो। अे बाता ता फेक्ट्री रा मजूर बैला बैठा करता ही रैवै।

मालीराम पछै बो चार पकडीज्यो बेटा ?

चोर अरे बापू, चोर कदैइ पकडीज्या करै ?

मालीराम सावतो बै चोर नै पिछाणतो तो हुसी बेटा ?

चोर रात रो टेम अर आजकाल तो छोरा–छोरी मोटर साइकिला ई ढाटा बाध बाध चलावै तो चोर माथे उघाडो चोरी करण नै थोडी ई गयो होसी बापू ?

मालीराम आ बात तो है बेटा। चोर तो सुगन ले र ही चोरी करणनै निकळे। (*कई देर सरणाटो। आधो इनै–विनै हाथ मारै*) तू कठै हे बेटा ?

चोर थारै कनै ई तो बैठो हू, बापू ? काई बात है बोल।

मालीराम अे बात रो पतो लाग्यो काई कै भुजिया री फैक्ट्री मे कित्ते री चोरी हुई ?

चोर पूरी बात तो अे सेठ लोग बतावै कोनी बापू, टेक्स सू डरता। बीस लाख री चोरी हुवै जणे दो हजार री चोरी बतावै। (*मालीराम हसै*) क्यू हस्यो बापू ?

मालीराम चोरा रै घर मे चोरी तो साची कुण बतावै ?

चोर अबै इया ई है बापू। कोई पेट–भर रोटी नै रोवै अर काई नै रिपिया धरणनै जागा को लाधेनीं।

मालीराम अेक बात बता बेटा। इत्ती बडी चोरी करण रे बाद बा चोर फेरू चोरी करसी ?

चार ज्यारा पड्या सुभाव जासी जीव सू पण म्हैं तो वै चोर री जागा हुवतो तो फेरू चोरी नीं करता बापू।

मालीराम म्हारो ही ओ सोचणो है बेटा। वै ने अबे आपरो घर बसा लेवणो चाइजे।

चोर अबै बै घर बसा ई लियो हे ताइ आपा नै काई बेरो बापू ?

मालीराम साची बात हे बेटा। (*हस र*) बाता ई बाता मे आपा तो चाय नास्तो ई भूलग्या।

चोर हा बापू ! म्हैं साग–सब्जी ल र आऊ। लै तू जित्तै बीडी बाळ।

मालीराम *अबे छोडी छुडाइ लत पाछी क्यू लगावै बेटा ?*

चोर पीलै पीलै बापू, बीडी टेम पास रो साधन है।

मालीराम खूटी माथे थेली टग्योडी हुवैला लेजा।

(मालीराम बीडी जगावै)

चोर थैली म्हैं ले ली बापू। म्हैं जा र आऊ।

मालीराम हा बेटा पाछो बेगो ई आ जाय।

(चोर थेलो ले र बारै जावै। मालीराम जल्दी सू उठै अर इनै विनै कई जोवै अर चोर रो थेलो देख र वैमे रिपिया देख र पाछो थेलो राख र माचै माथै आय र बैठ जावै अर बीडी सुलगावे। टेप बजावै भजन सुणै। चोर घर मे आवै)

चोर बापू, भजन तो बढिया लगाया है।

मालीराम आ भजना सू म्हारो टेम पास चोखो हुय जावै बेटा। सगळो सामान ले आयो बेटा ?

चार हा बापू। पण तू सूतो क्यू है ?

मालीराम आधे रो काम तो दिन–भर माचो तोडणो है बेटा। तू नई हो जणै ता थोडो हाथ पग हिलावतो ई हो पण अबै

(बीच मे बोलै)

चोर तो म्हैं काम करतो थकू थोडी ई हू, बापू।

मालीराम थक ता कोनी बेटा अे आधे अभ्यागत नै तू ई रोटी किता क दिन घालसी ? बीमार तो हूँ कोनी आख्या फूटगी पण हाथ पग तो चालै है।

चोर हाथ पग तो चालै है पण ओलाद फेरू काई काम री बापू।

(बीडी सुलगा र)

मालीगम कोई ता घर सू भाज र बिगड र तीन काडी रा हुय जावे पण तू तो समझदार हुयग्या बटा।

चोर अेम क्यारी समझदारी हे बापू ?

मालीराम अेक काम कर बटा।

चोर बाल बापू।

मालीराम आपणे लारलै कमरे री भीत रो अेक पासो सडक कानी

निकळै। तू कमरै री भींतडी तोड र सडक कानी बारणो काढलै।

चोर — वै सू काई हुसी बापू ?

मालीराम — हुसी काई दस पाच कप–तस्तरिया मोल लिया अर स्टोव घर मे है। तू चाय री दुकान खोललै।

चोर — तू तो म्हारे मूढै री बात कह दी बापू। चाय बणावण मे म्हैं हैडमास्टर हूँ।

मालीराम — तो शुभ काम मे देरी क्यू, बेटा। अै काम में तू आज ही लाग जा। अर दो–तीन तस्वीरा आळै मे पडी है जिकी वेच आ दो चार सौ रिपिया तो कोई भी दे देसी।

चोर — पइसा री तू चिन्ता ना कर बापू, इत्ता पइसा तो म्हारै कनै लाध जासी।

मालीराम — अेकर दो किला दूध सू धन्धा चालू करद।

चोर — राय ब्होत सातरी है बापू। कुण कैवै 'साठी अर बुद्धि नाठी।

मालीराम — म्हारी बुद्धि ता जवानी मे ही नाठगी बेटा नई तो घर रो घरकोलियो थोडै ही होवतो।

चोर — अबै वीत्योडी वाता नै भूल वापू। अबै पछतावो कर्या म्हारी मा पाछी थोडी ई आवै।

मालीराम — पाछी तो को आवैनीं बेटा पण मन मे पछतावो तो हुवै ही है। लोग केवै है नी बूढै आदमी री लुगाई अर टाबर री मा कदेई नीं मरणी चइज।

चोर — सगळै रोग री जड ओ दारू है बापू–जठै देखो जुलम दारू ही करावै।

मालीराम — जाणू हू बेटा। आख्या फूटगी तो काई हुयो। दारू री बोतल माथै साफ लिखोडो हुवै Liquor is injurious to Health

चोर — तू तो अग्रेजी भी बोलणी जाणै बापू।

मालीराम — बोलणी ? अरे। बेटा अग्रेज लोग म्हारी तसवीरा लेवणनै

आवता। म्हैं वा सू धुपाडिया अग्रेजी म वाता करता पण म्हारै समझ मे कोनी आवे बेटा कै सरकार चला र दारू क्यू बेचै ? देश री गरीब जनता नै क्यू बरबाद करै ?

चार — ओ दारू सू सरकार नै दुनिया–भर रो टैक्स मिलै बापू।

मालीराम — गोळी मारै इसै टैक्स नै। सरकार आ को सोचै नीं कै लोग दारू पी–पी र बरबाद हुय रैया है। म्हैं दारू नीं पीवतो तो क्यू तो थारी मा नै मारतो अर क्यू थारी मा मरती अर क्यू ओ विखो पडतो ?

चार — अबै छोड बापू। रोज रोज क्यारा रोवणो है। अरे मरग्या

(चोर उठ र भाजै)

मालीराम — अरे ! काई हुयो बेटा ? कठै भागे है ? *(चोर दो कप चाय ले र आवै)* आयग्यो बेटा ?

चोर — हा बापू।

मालीराम — कठै उठ र भाग्यो हो ? म्हैं तो बुरी तरिया डरग्या।

चार — ल पैला चाय रो प्यालो पकड। आपा वाता मे लागग्या अर मैं चाय स्टोव माथे चढा र भूलग्यो। जे थोडी देर याद नीं आवती तो चाय बळ र राखडो हुय जावती।

(दोनू जणा चाय पीवै)

मालीराम — अरे बेटा तू दूध कणै ले र आयग्यो हो ?

चोर — तू ता रोज मोडै ताई सूतो रैवे बापू, पण म्हारी ता राज ई वेगो उठण री आदत है।

मालीराम — आ आदत तो चोखी है बेटा। पैला तो म्हैं ई वेगो उठ जावतो पण

(बीच मे बोलै)

चोर — पण म्हारी मा मरिया पछे तू

(दोनू जणा जोर–जोर सू हसै)

मच माथे अधारो

तीसरो दरसाव

(मालीराम रो मकान। कमरो पैला दाई पडियो है। मालीराम माचै माथै बेठो है। चोर रिपिया ले र आवै)

चोर — लै बापू।

मालीराम — काई है बेटा ?

चोर — अै रिपिया पींपे मे घाल।

मालीराम — तनै कित्ती बार कैय दियो कै तू रिपिया थारै हाथा सू अे पींपे मे घाल दिया कर। मनैं ना तो रिपिया दीखै अर ना मनै रिपिया

(बीच मे बोलै)

चोर — ओ पींपो तो रिपिया सू काठो भरग्यो बापू अर दूजी बात थारै हाथा में बरकत है। दो किलो दूध ले'र धन्धो सरू करियो अर आज साठ सत्तर किलो दूध री चाय उठण लागगी। बिस्कुट अर बीडी सिगरेट अलग सू है। म्हें ता खाली गल्लै माथे बैठू। चाय आणदियो बणावे अर कप तस्तरी लिछमणियो धोवै।

मालीराम — कम पडै तो अेक--आध छोरो और राखलै बेटा।

चोर — अेक छोरै नै काल बुलाया है बापू।

मालीराम — देख बेटा दूधआळे रो हिसाब रोज रोज कर दिया कर नई तो पइसा छाती चढ जावैला।

चोर — दूध रो हिसाब ता रोज ही कर देवू अर चाय अर खाड भेळी ही मगालू।

मालीराम — ओ ठीक रैवै। अेमें कोई हुज्जत कोनी रेवे। नई तो अे दूधआळा बडा हुसयार हुवै। दूध में पाणी ई मिलावै अर ऊपर सू -

चोर — तू बा री चिन्ता ना कर बापू। म्हें रोज दूध नै देख'र ही लेवू।

(फोन री घन्टी बाजै)

मालीराम आ घण्टी कठै बाजै है बेटा ?

चोर म्हैं तनै बतायो कोनी बापू, म्हैं दुकान मे टेलीफून ले लियो।

मालीराम ओ काम तो तू ऊधो ही करियो है बेटा। लोगडा रोज तग करसी। पण अेक बात तो है तू अबै सेठ बणग्यो।

चोर अरे ! बापू, क्यू ऊधी बाता करे। दिन–भर मे जित्तोई कमाऊ थारै हाथ मे ला र देदू। फेरू ई म्हैं सेठ किया बणग्या। म्हैं ता थारा नाकर हूँ।

मालीराम देख बेटा ओ पींपो तू और कठैई राखदे। जे कोई चार–उचक्का आयग्या तो

(बीच मे बोलै)

चोर अरे बापू, चोर उचक्को आपणै घर मे म्हारो मतलब आ बात सुपनै मे ई ना सोची। दुकान माथै भात भात रा लोग आवै अर सगळा मनै चौखी तरै जाणण लागग्या।

मालीराम होटल रो काई नाव राख्यो है बेटा ?

चोर मालीराम चित्रकार री दूकान।

मालीराम अरे ! बेटा अे अभ्यागत रो नाव ? कुण आसी चाय री दुकान मे ?

चोर ग्राहका बिना ई रिपिया सू पींपो भरीजग्यो बापू ? देख बापू, आदमी जद आपरै पाप रो प्रायसचीत करलै तो भगवान भी बेनै माफ करदै।

मालीराम भगवान भला ही माफ करदो बेटा पण म्हैं अपण–आप नै कदेई माफ नहीं करू। गलती तो सगळा ही करे पण म्है थारी मा माथे अणूता जुलम कस्या। बै दिन टोगडियो जेवडी तुडा र गाय चूघग्यो अर म्है थारी मा रा हाडका भाग्या क्यू ? अेक दिन म्है म्हारो निजर रा चस्मो दरजी री दुकान मे भूल आयो अर हाडका थारी मा रा भाग्या अर बा बापडी केयो कै थे घर सू गया जणे थारै चस्मो लगायोडो हो पण म्है किसो मान्यो अर थोडी दर मे दरजी चस्मो ले र घरै ई आयग्यो कै पेटर सा ब थे चस्मो

म्हारी दुकान मे ही भूल आया। फेरू ई वै बापडी मने आ नीं कैयी कै था म्हारा हाडका क्यू भाग्या ? अबे तो घणोई रोऊ पण हमैं रोया सू टका काई वटै !

चोर अबै छोड बापू। सगळो लफडो दारू रो है। अवै तो तू दारू पीवै कोनी।

मालीराम म्हैं तो दारू पीवणो बद कर दियो बेटा। बद काई कर दियो जद खावण नै ई रोटी कोनी तो भोग कठै सू चढाऊ ? पण म्हारै जिसा गइवाळ घणा ई है दुनिया मे।

चोर अेक बात बता बापू, तू दारू पीवणो किया सीख्यो ?

मालीराम किया सीख्यो ! आ कोई मसीन या ट्रक चलावणी थोडी ही बेटा जिकै नै सीखणी पडै। गाडी तो राड चीलै ई बगै।

चोर हूँ समझ्यो कोनी बापू।

मालीराम अरे बेटा टाबरा मे सस्कार तो माईता रा ई आवै। म्हारो बाप ई अेकदम दारूडो हो। दिनूगै उठता ई वो कुरळा दारू सू करतो।

चोर कुरळा दारू सू करतो ! काई मतलब बापू ?

मालीराम अरे बेटा म्हारो बाप कचेडी में पेसकार हो अर ऊपरली कमाई घणी ई ही। रोज दो–चार सौ रिपिया जेब मे घाल र ई घर मे बडतो। जिया कुत्तै–बिल्ली रै पेट मे घी को खटैनीं वियाई हराम री कमाई सू आदमी म ऊधी–सूधी लत ई लागै। बापू रोज दारू–मास खावतो अर दारू रै सागै–सागै अेक तेलण सू खावण–पीवण लागग्यो।

चोर तेलण सू ! तेलण सू किया बापू ? तेलण फूठरी ही बापू ?

मालीराम फूठरी फेरू किसी क ! फेरू अेक कैवत है कै दिल लाग्यो गधी सू तो परी काइ चीज है अर इया तेलण मासी फूठरी काई गजब री फूठरी ही। सगळो से र तेलण मासी रो दीवानो हो। तलण मासी सू दो मिट बात करण रै खातर लाग बै सू तल लेवणनै आवता पण मजाल हे कोई तेलण मासी सू माडी–मादी मसखरी करलै। सरीर सू तगडी गजगामिनी कसूमल रग अर मृगनयनी। छोटै मोटै

आदमी री तो तेलण मासी सू बात करण री हिम्मत ई को हुवती नीं। मजाल है तेलण मासी ने कोई बिना काम बतळा भी लै फेरू म्हारै बापू रो डर।

चोर तेलण मासी रा आदमी काई काम करतो ? बो तेलण मासी नै दबा र कोनी राखतो ?

मालीराम बा किसी आदमी री परवा करती ही बेटा। बो बापडो दिन भर घाणी चलावता अर रात रा तेलण मासी री हाजरिया भरतो।

चोर तेलण मासी सू दादै री जाण–पिछाण किया हुयगी बापू ?

मालीराम म्हे ता बै दिना छोटो ई हो पण रामसिहजी बाता करया करता कै अेक दिन दो मुसटड तेलण मासी नै छडली। तेलण मासी तेल रो भरयोडो पींपो सडक माथे ढोळ दियो अर तागडी–बाट खिडा र जज सा ब आगे जा र पेस हुयगी। म्हारो बापू वठेई पसकार हो। जज सा ब दोनू मुसटडा न माय कर दिया। बे दिन सू बापू तेलण मासी रै मानीजण लागग्यो।

चोर दादीमा दाद ने मना करती कोनी ?

मालीराम तू किसी क बाता करै हे ? बेटा आदमी कदेई आपरी लुगाई री मानी है या डरयो है ?

चोर तो तेलण मासी रो आदमी तेलण मासी सू क्यू डरतो ?

मालीराम तेलण मासी कोई लुगाई थोडी ई ही बेटा। तेलण मासी डील डाळ सू फूठरी अर तगडी ही। जे आदमी रो मुरचो पकड लेवती ता सात दिन छोडती कोनी।

चोर तेलण मासी रो नाव तेलण मासी किया पड्यो बापू ?

मालीराम आ तो नीं मालूम बेटा पण सगळा लाग बै नै तेलण मासी कॅय र ई बतळावता।

चोर दादीमा ने अै बात रा बेरो तो हुवेला बापू ?

मालीराम अरे गधा आ बात कोइ लुकी रैवै ! रात रात बापू तेलण मासी रै घरै पड्यो रैवतो। लोकलाज रै डर सू मा तो आपरो मूढो

रीड लिया अर घर सू बारै निकळणो ई बद कर दियो। माय री माय घुटती रैयी अर अेक दिन आपरो रस्तो लियो।

चोर फेरू काईं हुयो बापू ?

मालीराम फेरू काईं हुवणो हो बेटा। मा रै मरया पछै बापू और ई खुलो हुयग्या अर घरै आवणो ई बद कर दिया।

चोर तू फेरू कठै रैया बापू ? थारी रोटी पाणी ?

मालीराम म्हैं कणै कणै बापू कनै जावतो। बापू पीयोडो तो म्हारै सू बात करता पइसा ई देवतो पण सादो हुवतो जणै डाट–मार र वठै सू भगा देवतो। पण तेलण मासी म्हारा लाड राखती अर रोटी–पाणी भी खडाती। फरू म्हारै ननाणैआळा मनै आपरै सागै गाव लेयग्या अर म्हारै मूछ्या फूटी कोनी तद ई म्हारो ब्याव कर दियो। अेक दिन बेरो पडियो कै बापू रै लकवो मारग्यो। फेरू म्हैं थारी मा नै लेय र सै र आयग्यो।

चोर अर बा तलण मासी ?

मालीराम तेलण मासी रोज घरै आवती अर बापू नै सभाळती। इया करता अेक दिन बापू भी आपरो रस्तो लियो।

चोर दादै रै मरया पछै तेलण मासी थारै कनै आई बापू ?

मालीराम कदैई–कदेई आवती अर थारी मा नै रिपिया–पइसा भी दे जावती। अेक दिन तेलण मासी आपणै घरै आ र आपरै घरै जाय रैयी ही कै अेक गोधै तेलण मासी नै सींगा मे उठा र बापडी नै इसी पटकी कै पडती रा ई तेलण मासी रा प्राण निकळग्या। लोगडा कैवै कै बा गोधो भी तलण मासी रो (*मालीराम जोर सू हस्यो अर फेरू आपरी आख्या पूछतो बोल्यो*) आ दुनिया भी रग बिरगी है बेटा आदमी नै जिदगी मे काईं–काइ खेल खिलावे।

चोर कठै री बात अर कठै पौंचगी बापू, पण तू आ को बताइ नीं कै तू दारू पीवणो किया सीख्यो ?

मालीराम अरे बेटा म्हैं अेक पेटर कनै तस्वीरा बणावणी सीखण जावतो। म्हैं पेटर रा ब नै उस्ताद कैवतो। उस्ताद रोज

रात रो दारू पीवतो। मनै ई कनै बैठा लेवतो अर अेक दिन मने भी अेक गुटको दे दियो। म्हैं भुजिया चवीणी रै लालच मे दारू पीवणी सीखग्यो।

चोर घूम–फिर र सगळे रोग री जड ओ दारू ई है बापू।

मालीराम रोग भी किसो कैंसर – जिकै रो दुनिया म कठैई इलाज कानी। अक कवत हे बेटा अेक छोरै नै कई दिना सू खासी आवती अेक आदमी बोल्यो – जा ठाकरा कनै सू थाडा दारू माग ला अर रात रो सोतै टेम अेक चमचो भर र ले लिये। वै जा र ठाकरा सू थोडो दारू माग र पूछ्या – ठाकरा दारू सू म्हारी खासी जासी परी ? ठाकर बोल्यो – तू खासी री बात करै गधेडा अे दारू सू राज रा राज चल्या गया। आ तो खाली खारी हे।

(दोनू हसै)

चोर वाह बापू, थारी कहाणी सुण र मजो आयग्यो अक बात पूछू, बापू ?

मालीराम बोल।

चोर जठै देखो घूम–फिर र ओ दारू आडो आजावै। अै दारू सू बडी बडी गुवाडिया उजडगी। फेरू ई आदमी दारू पीवणो छोडै क्यू कोनी ?

मालीराम देख बेटा दारू पीवणो कानून अर सरकार तो छोडा को सकैनीं क्यूकै दारू सरकार खुद बेचै। हा अेक सरत माथे लाग दारू पीवणा बद कर सके।

चार बा सरत काई हे बापू ?

मालीराम सरत आ है बेटा जे आदमी री जगा औरत दारू पीवणा सरू करद।

चोर आ कोइ सरत ह बापू ?

मालीराम दख बेटा जद लुगाइ दारू पीवणो सरू कर दसी तो बा भी आदमी दाईं ऊधा काम करणा सरू कर देसी। ऊधी बोलसी अर ऊधी ई चालसी। ना लाज ना सरम आज आदमी दारू पीवे अर लुगाइ आदमी नै समझावै हाथ पग

जोडै आदमी कनै सू मार खावै आपरा हाडका रोज भगावै पछै ओ काम आदमी नै करणो पडसी अर आदमी सरमा मरतो आपैई दारू पीवणो बन्द कर देसी।

(चोर जोर सू हसै)

चोर बात तो ठीक है बापू।

मालीराम अै खातर ना तो लुगाई दारू पीवै अर ना आदमी दारू पीवणो छोडै।

चोर वाह बापू, अमर हुयजा। काईं लाख रिपिया री बात कैयी है। अेक बात कैऊ बापू ?

मालीराम बोल।

चोर अबै तो रिपिया री कमी कोनी घर मे बापू। जे पीवण री इच्छा हुवै तो मगा र देऊ ?

मालीराम अरे ! लापो लगा बै जैर रै। चौखी–भली गुवाडी ही म्हारी सगळी उजाड र राख दी।

चोर अबै मर्‌योडा मुडदा क्यू उखाडै है बापू ? अबै कित्तोई पछतावो कर म्हारी मा तो पाछी को आवैनीं।

मालीराम थारी मा तो पाछी को आवैनीं बेटा पण म्हारी बेटी भीखली भी तो म्हारै ज्यू ही सजा भुगत रैयी है।

चोर इसी बात ही तो ब्याव करण सू पैला सोचणी ही। अबै तो विधग्या सो मोती।

मालीराम छोरो देख्यो–भाळ्यो हाथ रो चोखो कारीगर पण दारू री लत म पड र खराब हुयग्यो।

चोर अबै लत पड ही गई है तो थारै दाई मोडी–बेगी आपेई छूट जासी बापू ?

मालीराम वो दारू छोडसी जित्ते म्हारी भीखली मर जासी बेटा या बा उफतोडी कुवो–खाड कर लेसी।

चोर छोरी कुवो–खाड करै बै सू पैली पाणी आगै पाळ बाध्योडी चोखी बापू।

मालीराम म्हैं समझ्यो कोनी बेटा।

चोर देख बापू, थोडी हिम्मत तो राखणी पडे। इसै कुमाणस सू लारो छुडा र या छोड–छिटका र आपरै टाबर रो नूवैं सिरै सू दूजो घर वसादे।

मालीराम अे जनम–जनमान्तर रा रिस्ता इया तोडीजै थोडा ही है बेटा।

चोर अे सगळी पुराणी अर बोदी वाता है बापू। आदमी परणीजै जणै सात फेरा खावै अर सात वचन निभावण री वात करै अर ब्याव हुवण रै पछै वो सगळा कौल–करार भूल जावै अर लुगाई नै खाली भोगणआळी चीज या पग री जूती समझे।

मालीराम वात तो थारी सोळै आना साची है बेटा पण
(बीच मे बोलै)

चोर पण–वण काई कोनी बापू। म्हारी मानै तो छोरी रा रोज हाडका भगवाण सू तो चाखा आ ह के छारी नै घरै लाय र वेठाले। छोरी पापड बट र आपरो पेट भर लेसी। अर आ ई थारै नई जचै तो ढग रो आदमी देख र बैरै लारै करदे।

मालीराम कदेई–कदैई तो आ ही सोचू हू, बेटा। पण डरू हूँ कै घडो फूट र ठीकरी हाथ नई लाग जावै।

चोर देख बापू, पॉचू आगळ्या बराबर को हुवैनीं। फेरू छोरी रा भाग है।

मालीराम छोरी रा भाग ई चोखा हुवता तो बैमे रोभा ई क्यू पडता वेटा ? पण हमकी तो म्हे पक्की सोच राखी है कै जे बो हरामी अबकी बार म्हारी छोरी रै साग मारा–कूटी करसी तो म्हे बै ने पाछी वै कसाई कन को भेजूनी।

चार दख बापू, ज आदमी इत्ती हिम्मत करले तो कोई टावर सासरे मे दुख को पावैनीं पण वा तो आ ई सोचै कै बटी रो धन घर म किया खटासी ?

मालीराम साची वात है बेटा। आ माडी साच ता आदमी नै आपरी बदळणी ई पडसी जणै ई अे समस्या रो हल निकळसी। अे सू आदमी नै ऑख हुसी अर समाज सुधरसी।

मालीराम   थनै रो दरद हुवैला बेटा, कै दिन चोर री फिकर करतो ही। बदळ तरह सिर री मनकै अर अेकाअेक पुलिस री सीटियां बाजी। थोडी देर मे म्हारै घर मे भी धमीड सुणीज्यो। म्हैं समझग्यो कै चोर घर मे कूदग्यो है। जे म्हैं बात रोळा करतो तो तू पुलिस सू डरतो म्हारो घाटो मोस नाखतो। इण खातर म्हैं आधो हुवण रो नाटक करयो। घर मे थारै आया पछै म्हैं तनै बेटो बेटो कैवण लागग्यो। तो थनै पूरो विसवास हुयग्यो कै डोकर आधो है।

(पगा म पड'र)

चोर   माफ तो तू मनै करदै बापू। जे तू बै दिन साची ई रोळा कर देवतो तो पुलिस मनै जरूर पकड लेवती क्यूकै म्हारै कनै रिपिया सू भरयोडो थैलो हो।

जे पकडीज जावतो तो आज जेळ री रोटी खावतो अर मोडो–बेगो छूटतो तो फेरू म्हैं चोरी ही करतो पण तू म्हनै शैतान सू इनसान बणा दियो बापू।

मालीराम   पण तू चोर क्यू बण्यो बेटा ? थारा मा बाप कठै है ?

चोर   म्हैं भोपाल मध्यप्रदेश रो रैवणआळो हूं, बापू । बाप मिलट्री सू रिटायर हुयग्यो। रोज दारू पीवणो अर रोज म्हारी मा नै मारणो अर अेक दिन बै दारू पीयोडै म्हारी मा नै जान सू मारदी अर घर सू भागग्यो। भागती टेम अेक ट्रक

पास रो री नोट,

नीचै आयग्यो।

अबै म्हैं अनाथ कठै जाऊ। मकानआळो घर खाली करा र मनै घर सू काढ दियो। म्हैं केई दिन इनै बिनै मजूरी करी। फरू अेक भायल सागै भोपाल सू राजस्थान आयग्यो अर अेक फैक्ट्री मे काम करण लागग्यो। बाकी री कहाणी म्हारी तनै बतावोडी ही है बापू।

मालीराम थारो नाव काईं है बेटा ?

चोर म्हारो नाव भूरसिंह है बापू, अर जात रो राजपूत हूँ।

मालीराम थारी कोई फोटू वगैरा तो पुलिस कनै कोनी बेटा ?

चोर नईं बापू। म्हैं तो पैली बार ही जवारियै रै चक्कर म आ र फैक्ट्री मे कूद्यो। जवारियो तो मरग्यो अर मैं पुलिसआळा सू बच'र थारै घर मे कूदग्यो।

मालीराम खैर अबै छोड बाळ बै बाता नै। अबै तो बै बाता नै घणोई टेम गुजरग्यो।

चोर अेक बात बता बापू। थारो बेटो हरिराम भूल्यो-भटक्यो अठै आयग्यो तो तू काईं करसी ? मनै घर सू काढ देसी ?

(हस र)

मालीराम अरे बेटा म्हारै किसो बेटो है ? अेक छोरी भीखली है जिकी नै परणा दी। आर म्हारै कोई आगे ना लारै। बस अेक तू है। जे तू छोड जासी तो पाछो अेकलो हुय जासू।

चोर अबै म्हैं कठे दड मे जाऊ बापू। अबै तो 'मरना तेरी गली मे जीना तेरी गली में' अर तू जावण रो केय देसी तो बा थारी मरजी। नईं ता मालीराम री चाय री दुकान जिन्दाबाद।

(चोर उठ)

मालीराम किनै चाल्यो बेटा ?

चोर म्है थोडो दुकान सभाळ र आऊ।

(चोर जावै अर बारै कानी सू भीखली आवे। बा मालीराम रै लिपट जावै अर रोवती बोलै)

भीखली बापू तनै कित्ती बार कैय दियो कै बो कसाई मनै जान

सू मार देसी। बै आज दारू पी र फेरू मनै मारी।

मालीराम रो मत बेटी अबै

भीखली नईं नईं बापू, म्हैं पाछी बै कसाई रै अठै नईं जाऊली। तू म्हारो घाटो थारै हाथा सू मोसदै पण म्हैं बठै मर जाऊ तो ई नीं जाऊ।

मालीराम देख बेटी म्हारी बात तो सुण

(बीच मे रोवती बोलै)

भीखली नईं बापू ! म्हैं थारी अेक बात नीं सुणू। जे थारै घर मे म्हारै खातर जगा कोनी तो म्हैं कुओ खाड कर लेसू, पण बै हत्यारै रै घरै को जाऊनीं।

मालीराम ओ हो तू सुण तो सरी

भीखली नईं नईं बापू। म्हैं अठै भूखी रैय जासू, पण हमै म्हासू म्हारा हाडका नीं भगाईजै। अर तू ई म्हारै सू धापग्यो तो म्हैं

(बीच मे बोलै)

मालीराम म्हैं तनै अबै कठैई नीं भेजू, पण तू म्हारी बात तो सुण।

(रोवती–रोवती)

भीखली म्हैं मार खा खा र थकगी बापू, अबै म्हासू

(भीखली रोवै। मालीराम छाती रै लगावै)

मालीराम मनै माफ करदै बेटी ! म्हारै लखणा रै कारण ई तनै इत्ता दुख भोगणा पड्या। म्हे थारी सौगन खा र केऊ हूँ, अबै म्हे तनै बै कसाई कनै कदैइ नीं भेजू। जे बो हमें तनै लेवण आयग्यो तो म्हैं ब कसाई ने बकरो काटै ज्यू थारै सामें ही काट नाखसू।

(चोर आवे)

चोर काईं बात है बापू ?

मालीराम इनै आ बेटा। आ है म्हारी बेटी भीखली। आज वै कमीणै फेरू अेने मारी अर घर सू काढ दी।

नीचै आयग्यो।

अवै म्हैं अनाथ कठै जाऊ। मकानआळो घर खाली करा'र मनै घर सू काढ दियो। म्हैं केई दिन इनै विनै मजूरी करी। फेरू अेक भायलै सागै भोपाल सू राजस्थान आयग्यो अर अेक फैक्ट्री मे काम करण लागग्यो। बाकी री कहाणी म्हारी तनै बतावोडी ही है बापू।

मालीराम थारो नाव काई है बेटा ?

चोर म्हारो नाव भूरसिंह है बापू, अर जात रो राजपूत हूँ।

मालीराम थारी कोइ फाटू वगैरा तो पुलिस कनै कोनी बेटा ?

चोर नई बापू। म्हैं तो पैली वार ही जवारियै रै चक्कर मे आ'र फैक्ट्री मे कूद्यो। जवारियो तो मरग्यो अर मैं पुलिसआळा सू बच'र थारै घर मे कूदग्यो।

मालीराम खैर अबै छोड वाळ वै बाता नै। अवै तो वै बाता नै घणोई टेम गुजरग्यो।

चोर अक बात बता बापू। थारा बेटो हरिराम भूल्यो–भटक्यो अठै आयग्यो तो तू काई करसी ? मनै घर सू काढ देसी ?

(हस'र)

मालीराम अरे बेटा म्हारै किसो बेटो है ? अेक छोरी भीखली है जिकी नै परणा दी। ओर म्हारै कोई आगै ना लारै। बस अेक तू ह। ज तू छाड जासी ता पाछो अेकलो हुय जासू।

चोर अब म्हैं कठै दड मे जाऊ बापू। अबै तो 'मरना तेरी गली म जीना तेरी गली मे' अर तू जावण रा कय दसी तो बा थारी मरजी। नई तो मालीराम री चाय री दुकान जिन्दाबाद।

(चोर उठै)

मालीराम किनै चाल्यो बेटा ?

चोर म्हे थोडो दुकान सभाळ'र आऊ।

(चोर जावै अर बारै कानी सू भीखली आव। बा माली रै लिपट जावै अर रोवती बोलै)

भीखली बापू तन कित्ती बार कैय दियो कै बो क

चोर आखिर वो चावै के है ?

मालीराम वो अवै कीं भी चावो बेटा। म्हैं भीखली नै वै हत्यारे रै अठै पाछी को भेजू नीं।

चोर अगर वो इया दारू पी पी र केई रै टाबर नै मारै तो तनै पुलिस मे रपट करणी चाइजै। पुलिसआळा अेक मिनट में वै री चरबी उतार देसी।

भीखली औ कुण है बापू ?

मालीराम ओ म्हारो जवाई बेटो है बेटी।

भीखली जवाई बेटो ! म्हैं आ नै जाणी को'नी बापू

(चोर बीच मे बोलै)

चोर बापू, तू कैवै तो वै कसाई सू म्हैं बात करू ?

मालीराम नईं बेटा अवै वै सू बात करणै री कोई जरूरत कोनी। तू अठीनै आ बेटा।

(चोर मालीराम रै नेडो आवै)

चोर बाल बापू।

मालीराम देख बेटी आज सू थारो घरआळो ओ हरिराम है। अवै तू जीवै–मरै औ घर मे हरिराम रै सागै रैसी

भीखली म्हैं समझी कोनी बापू।

(मालीराम भीखली रो हाथ चोर रै हाथ मे देवै)

मालीराम देख बेटा आज सू म्हैं भीखली नै थारै हवालै करू आज सू अे रै सुख–दुख रा साथी तू है। आज सू म्हारै अर भीखली खातर वो कुमाणस हमेसा खातर मरग्यो।

(चोर अर भीखली दोनू मालीराम रै पगै लागै। मालीराम दोना नै आपरी छाती रे लगावै)

मच माथै धीरै धीरै अधारो

अगरचन्द   थोडी जरदे री पुडी ता ला र दै।

कमला   मै मरगी तो इत्ती टाजरया कुण भरसी ?

अगरचद   अबे तू किसी काल ही मरे है ?

कमला   थ ता आ इ चावो हा के म्हे बगी मरू।

अगरचद   तू तो इया बाल रेयी है जाणे म्हारै चार चार लुगाया है।

कमला   नई है तो लियाओ बरजै कुण है थानै ?

अगरचद   दख सेठाणी अबे दिनूगे दिनूगे क्यू माथा लगावे है। बटो तो टाल कुवारो फिरै अर म्हे दूजी ले र आऊ ?

कमला   कुवारा फिर ह ता वे रे खातर टावर म्हारो बाप ढूढसी ? काई छप्यो हे अखबार म ? छोरी री जात काई है ?

अगरचद   वाल्या नी छोरी आपणी ही जात री है अर सोळे किलास पढ्योडी ह। बाप गाव रा सरपच ह अर गाव म वैद्यगीरी न्यारी कर। आ दख फाटू।

(फोटू देख र)

कमला   गाव रो सरपच है तो ब्याव भी सागोपाग करसी।

अगरचन्द   सागापाग काई करसी अखबार म साफ लिख्योडा है– सगा आदर्श ब्याव करणा चाव।

कमला   अ सब कवण री बाता हे। लोगदिखावे खातर अखबार मे छपा दव बाकी आपरी छारी न नागी कुण काढे हे घर सू। जे की नीं देसी तो ई मनै लवणा आव। थ जा र सगे सू बात ता करो।

अगरचद   पला थार छारे न तो पूछले के बो काई केवे। छोरी री फाटू दिखादे।

कमला   छोरे ने काइ पूछणो हे ? छार ने साग ले जावा। सरकारी नोकर हे देखण म भी माडो नीं लाग। कपडा पैर र नाकरी माथे जावै जणे ओमपुरी दाइ लाग।

अगरचद   आमपुरी हीरा लागे तने ?

कमला   व री आवाज आगे हीरा धीरा सगळा पाणी भरै ।

अगरचद   अठे पटडी तो बेठ सके हे। छोरी पढ्योडी भी हे अर

फूठरी भी है। पण थारा बटा लखणा रा लाडो है। ब्राह्मण रो बेटो अर रात रा दारू पी र घर मे आवे।

कमला रात रो दारू पी र आवे है तो दिन मे कुण दख हे ?

अगरचद कोई देख लिया अर पतो चालग्यो तो गुड गोबर हुय जासी।

कमला ब्याव हुया पछै पता भलाई लागो। बस ब्याव सू पला पता नई लागणो चाइजे।

अगरचद दारू रो पतो लाग्या बिना रैया करै। आज नइ तो काल पतो तो लागसी।

कमला इया पतो लागै तो लागो जे दारू पीवणी इत्ती माडी वात हे तो सरकार वेचणी वद क्यू को करै नी ? कोई चीज वजार मे विकसी तो लाग तो लेसी अर पीसी।

अगरचन्द हा हा खीर है। तू ही पी लिया कर।

(अगरचद माय जावै)

कमला अवै किनै चाल्या ?

अगरचन्द था सू माथो लगावणा भौत माडा है। सगळो नसो उतार दियो।

कमला वटो दारू पीवे अर नसो थानै चढ हे ?

अगरचद अरे जरदे री पुडी ले र आऊ आर जावण नै कठै ठाड हे मने।

(अगरचन्द माय जावै। बारै कानी सू सुन्दर आवे। कमला अखबार पढै)

सुन्दर अखबार म कोई खास खवर हे मा ?

कमला कोई ब्याव रो विज्ञापन छप्यो हे। देख काइ लिख्यो ह ?

सुन्दर म्है होटल माथे अखबार पढ र आया हू। छोरी साळ किलास पढ्योडी हे फूठरी हे अर आपणी जात री हे।

कमला फेरू अडास काई है ? थारै वाप नै बोलद के मनै छोरी परसन्द ह।

सुन्दर सब आप आप रा भाग लिखा र आवै मा। थ काई साचण लागग्या बावूसा ?

अगरचन्द साच रैयो हू के म्है जाऊ तो हू, पण चम्पालालजी ने ओ पता चालग्या के छोरो दारू पीव तो म्हारे खातर मरणा हुय जासी।

सुन्दर वे री थे चिन्ता ना करो बावूसा। ब्याव नई हुवे जिते म्हे दारू रे हाथ ही को लगाऊ नीं।

अगरचद तो ब्याव रै पछ पीया किसा थार बाप रा नाव निकळ ह हरामखोर ?

कमला अबै थे शुभ काम जावता क्यू माथो खराब करो हा ? आप सिधावो अर भेरूनाथ बाबै रै हाथ जोड र जाया। बाबो भली करसी।

अगरचद मनै तो बावा भली करतो लाग्यो कोनी।

कमला रावता जावे जिका मरिया री खबर ल र आवे।

अगरचद तो तू हसती जा परी अर सागे ओ कपूत न ई लेजा।

कमला कपूत है ता खाध देवण नै ता आडो आसी ! जण देखो छोर न खावता रेवो। कदैई लाड स् बतळायो हे छारे ने ?

अगरचद अबे लाड करणआळी तू हे नी। लाड इ लाड म बिगाड र तीन कोडी रो तो कर दिया बाप ने।

कमला मूढे माय सू सावळ वाल्या। म्हारा बाप तो थानै रावणन इ को आवैनीं।

सुन्दर मा तू कावळ क्यू बालै ह। वावूसा जा ता रया ह बावूसा थ राटी ता जीम लिया ?

कमला रस्त म घणा ई हाटल हे। इत्ती वगी राटी थारे वाप वणाइ ह ? अवार तो दूध पीया हे। थाडी दर भूखा रय जासी ता मर कानी

(बीच म बोले)

सुन्दर पैला म्हारो ब्याव ता हुवण द अवार तू केनै मारा धारा कर रैई है ?

(अगरचद आवे)

अगरचद — अडास आ है के छोरी रो बाप आदर्श ब्याव करणा चावे।

सुन्दर — ब्याव ता आदर्श ही हुवणा चाइजै बाबूसा। आदर्श ब्याव रा मतलब हुवे क ब्याव म बडा बडा लाग बडा बडा नता राजनता आव फाटुवा माथे फाटुवा खिच।

अगरचद — सगे वरात म खाली साठ जानी बुलाया ह आ बात पढी के नई ?

सुन्दर — वे साठ आदमी बुलाया ह ता आपा पताळीस आदमी ई ले चालसा। बा ई काइ जाणसी क काइ पार्टी मिली है।

अगरचद — ठीक है म्ह काल जा र सगे सू बात करसू

(बीच मे बोलै)

कमला — तो आज काई कमतर हे थारे ? अवार ई रवाना हुय जावा अर सुन्दर बेटै नै सागे लजावा। सुन्दर ने देखता ई सग रै लाळ्या पडण लाग जासी। आजकाल सरकारी नाकर्‍या पडी कठ ह ! सग न ता चला र आपण अठे आवणो हो

(बीच मे बोलै)

सुन्दर — म्ह सागे का जावूनीं मा।

कमला — क्यू, सागे जावता तने सरम आव ह ?

सुन्दर — सरम ता को आवैनीं मा पण बठै काई म्हारै सैधो आदमी मिलग्यो तो लफडो हुय जासी ।

कमला — बात ता सही ह। थ सुन्दर री फाटू ल जावो। बा चोखा रेसी। ज छारी पसन्द आ जावे तो चट मगणी अर पट ब्याव करणो ह। सगळी बात तय कर र आया।

सुन्दर — छारी म्हारी दख्योडी है मा। पेला बा म्हारी कालेज म इ पढती ही अर पढण र साग साग बा खेलण कूदण म भी ब्हात हुसियार ह।

कमला — छारी थारे देख्याडी ही अर तू बे ने पेला सू जाणे हा तो इत्ता दिन बताई क्यू कानी ? जे आर कठेई सगाई हुय जावती ता ?

सुन्दर सब आप आप रा भाग लिखा र आवै मा। थे काई साचण लागग्या बावूसा ?

अगरचन्द साच रैया हू के म्हें जाऊ ता हू, पण चम्पालालजी ने ओ पतो चालग्या के छारा दारू पीव ता म्हारे खातर मरणा हुय जासी।

सुन्दर वे री थे चिन्ता ना करा बावूसा। ब्याव नईं हुवे जित म्हें दारू रै हाथ ही को लगाऊ नीं।

अगरचद तो ब्याव रे पछे पीया किसो थारै बाप रा नाव निकळ है हरामखोर ?

कमला अब थ शुभ काम जावता क्यू माथो खराव करा हा ? आप सिधावो अर भेरूनाथ बाबै रै हाथ जोड र जाया। बाबो भली करसी।

अगरचद मनै ता बावो भली करतो लाग्यो कोनी।

कमला रावता जावै जिका मरिया री खबर ले र आवे।

अगरचद तो तू हसती जा परी अर सागे अ कपूत न इ लेजा।

कमला कपूत है ता खाध देवण नै ता आडो आसी ! जणै देखो छोरे न खावता रैवा। कदैइ लाड सू बतळाया है छोरे ने ?

अगरचद अबे लाड करणआळी तू ह नी। लाड ३ लाउ म बिगाड र तीन काडी रा ता कर दिया बाप ने।

कमला मूढे माय सू साबळ बोल्या। म्हारो बाप तो थाने रावणनै इ को आवेनीं।

सुन्दर मा तू कावळ क्यू बाले ह। बावूसा जा ता रया ह बावूसा थ राटी ता जीम लिया ?

कमला ररत मे घणा इ होटल हे। इत्ती नगी राटी थारे बाप बणाइ ह ? अबार तो दूध पीया ह। थाडी दर भूखा रय जासी ता मरे कानी

(बीच म बोले)

सुन्दर पैला म्हारा ब्याव ता हुवण दे अबार तू कने मारा धारा कर रई है ?

अगरचद इया गीधा रै चाया किसी गाया मरै हे।

कमला थे गाय कोनी गोधा हो।

अगरचद गोधो हुवतो नीं तो तू इया लपर–लपर का करती नीं।

सुन्दर बाबूसा आप सिधावा नी बस रो टेम हुयग्यो।

कमला ओ धोतियो तो दूजा पैर–बाळ लो।

अगरचद तू थारो काम कर।

(अगरचद बारै जावै)

सुन्दर मा तू थोडी जबान माथे कापू राख्या कर। टम वम तो देख्या कर।

कमला क्यू, म्हैं थारी अर थारे बाप री दबेल कोनी।

सुन्दर अरे मा तू समझे कोनी। अबार बाबूसा नाराज हुयग्या तो हाथ मे आयोडो रिस्तो निकळ जासी।

कमला जणै ई तो चुप ही। नई तो मजाल है बे म्हारै सामने बोल ले।

सुन्दर लै चाल चाल रोटी बणा।

कमला देख बेटा म्हासू आज रोटी बोटी कीं नीं बणाइजै।

सुन्दर ठीक है म्हे दफ्तर जाऊ। काइ नास्ता–वास्ता कर लसू।

(सुन्दर बार जावै कमला टेपरेकाडर मे भजन लगावे अर फोन बाजे)

कमला कुण बोलो हा ? आवाज साफ को आवेनी। कुण ? सुन्दर रा बापू ? कठे सू बोला हा ? रायसर सू ? इत्ता बगा रायसर पूगग्या ? बूढा–सारा क्यू कूड बोला हा ? सुन्दर री सागन सगाई री बात पक्की हुयगी अर देवउठणी ग्यारस री ब्याव री तारीख इ पक्की हुयगी ? सुन्दर दफ्तर गयो है। हा फोन राखू।

(फान राख र टेप वन्द करै अर बारे सू सुन्दर आवे)

सुन्दर केरा फोन हो मा ?

कमला आयग्यो तू ? थारा बाबूरा रो फोन हो। सगाई री बात

पक्की हुयगी अर दवउठणी ग्यारस रा सावो तय हुयो है पण अेक यात म्हारी रामझ म कोनी आवै के थारा वावूसा इत्ता वेगा रायसर पूग किया गया ?

सुन्दर अर मा रायसर अठे सू दूर कित्ता क ह ? कार सू दस मिनट रा रस्ता है।

कमला खाली दस मिनट रो ! म्हैं जाणी रायसर जैपुर–जाधपुर जित्तो अळगो है।

(सुन्दर हसतो वालै)

सुन्दर हुगयो थारे काली सू अरे तू किनै चाली मा

कमला गडियाजी न खुसखवरी सुणा र आऊ।

सुन्दर ता घर म कुण रैसी म्हें भी कामेसजी नै वधाइ दे र आऊ।

कमला म्हैं तो जाऊ तू ई ताळो लगा र चल्यो जा अर पाछो वेगा आई। म्हैं घर म अेकली हूं।

(कमला वारे जाव)

सुन्दर पण सुण ता

(सुन्दर नाचतो–नाचता गाणो गावे। घर मे शहनाई री धुन सुणीजै)

धीर धीरे मच माथै अधारो

दूसरो दरसाव

(अगरचद रो मकान। अगरचद री घरआळी कमरै मे ऐकली वैठी है। अगरचद आवै)

अगरचद काई वात है भागवान ? वींदणी आया पछे तू सूनी–सूनी क्यू रैवण लागगी ? तवीयत तो ठीक है ?

कमला तवीयत तो ठीक है क्या सू मरू हूँ पण अवे तो मौत आ जावै तो चोखो।

अगरचद वेगी धापी नी जीवणे सू ? मरण सू पेला पोता पोती तो दख लेवती।

कमला वेटा ई न्याल नीं करै ता पोता पोती किसा न्याल करसी ?

अगरचद इया दिनूग दिनूगे कावळ क्यू वालै है ? आखिर हुयो काई ?

कमला पडोस री लुगाया आवै वींदणी ने देखे अर जावत्या कैवे के वींदणी काई लाई है कमला चाद रो टुकडो है।

अगरचद वापड्या झूठ थोडी इ वोलै। अब तू ही वता आपण कडूव मे इत्ता फूठरा टावर केईरे अठ आया ह ?

कमला *चादू काई फूठरै टाबर नै ? देवण लेवण में तो धूड उडगी। घर मे आवै जिको ई ताना मारे के वींदणी दायजे म काइ लाइ ?*

अगरचद चम्पालालजी अखबार म साफ लिख्या हो क म्हे आदश ब्याव करसू। ब्याव मे खाणो कित्तो वढिया वणायो अर खातरदारी म काई कमी नी राखी।

कमला खाणा रात रो खावा अर दिनूगे गावर हुय जावे पण वरात्या ने दियो काई ? जुवारी रा पाच पाच रिपिया ही को जुडिया नी। इसो काइ भूखो मरे हे सगा ?

अगरचद धीर वोल माय वींदणी सुणती हुसी।

कमला सुणै है ता वीस वार सुणो। म्हे किसो झूठ बोलू हूँ। हीणा कमीणा ई आजकाल इत्ता बढिया बढिया ब्याव करै। थारो सगो तो गाव रो सरपच हे अर वैद्यगीरी न्यारी करै। सगो ता सगो सगळा गावआळा ही मगता निकळ्या। गाय भेंस नै घर सू काढे ताई नुई जेवडी सू बाध र काढे।

अगरचद अबै तू वेकार री वात क्यू करे है ? काई कमी है थारे घर मे ?

कमला कमी तो क्यारी ई कोनी पण आवण जावणआळा नै काई जबाब देऊ ? आवै जिको ई पूछे के बींदणी रो बाप ब्याव किसो क कियो ?

अगरचद बोल दिया कर के म्हाने तो पढ्यो–लिख्यो टाबर चाईजतो बस। वो मिलग्यो।

कमला काई धूड मिलग्यो। काई तो लोकलाज रो ध्यान राखणो हो। छोरी नै एक ओढणी–लहगे मे घर सू टोरदी।

अगरचद लोकलाज खाली हाडा कूडा दिया को रेवैनीं आदमी री समाज मे साख हुवणी चाईजे। सगो गाव रो सरपच हे। आ कोई कम बात है ?

कमला थे माथै पर उठाया फिरा सरपच ने ? गाव रा सरपच तो पणियाजी भी है। बेटी रै ब्याव मे सगळो सै र ढूक्यो अर तीन ट्रक भर र माल दियो बेटी ने।

अगरचद माल तो दियो पण पणियाजी नै सगळो से र जाणे। थारै वेटै नै कोइ छोरी ददी वा ही व्होत ह। ब्रामण रो बेटो अर राज दारू पी र घर म बळे।

कमला दारू पी र आवै तो वे ने पेला बिगाड्यो कुण हा ?

अगरचद म्ह विगाड्या वै न ? दा चाटा मारते ही बीच म पडती तू। (*मूढो बिगाड र*) अक ही छोरा है बापडै ने गधे दाइ मारा।

कमला अव किसा मार–मार र सुधार लियो वे ने ? म्हें दायज री बात करू अर लाडीसा रो पख लेखण लाग जावो। जे दा चार लाख रो माल ले आवती ता काई जाणै काई करता ?

अगरचद दायजै री तनै भूख है मनै कोनी। मनै तो टावर पसद आयो अर म्हैं ले आयो।

कमला थानै दायजो नई चाइजै तो थारी बेटी नै क्यू दियो दायजा ? कर दवता आदर्श ब्याव ? जण तो कनै नीं हा तो ई माथे–चोटी कर र लाया।

अगरचद माथे--चोटी कर्‍यो तो उतार्‍यो ई म्हैं हो करजो। थारै बेटै री नौकरी तो काल लागी है बा ही म्हारै कारण।

कमला लागी है तो पाछी छुडादो नोकरी।

अगरचद पाछी छुडादो। घर मे नई सुवाऊ तो बारै चल्यो जाऊ ?

कमला उखडो कनी। नई तो मनै किसा न्याल करो हो घर माय रैय र ? साची बात कैऊ तद चिडको लागण लाग जावै।

(सुन्दर घर मे आवै अर अगरचद बारै निकळ जावै)

सुन्दर काई वात है मा ? क्यारी माथाफोडी है ?

कमला तनै हजार वार रो ली कै तू दफ्तर सू सीधो घरै आ जाया कर। क्यू लाग्यो हे म्हारे लारे ? काल फेरा खा र आयोडी सगळा नै चोखी लागण लागगी।

सुन्दर आखिर बात काई हुई ?

कमला थारी जोडायत बोलै थारो बेटो दफ्तर सू मोडो घणो आवै।

सुन्दर माडो आऊ तो दफ्तर नेडो कोनी। अर इत्ता ई बेगा बुलावणा हे तो बाप ने केय र स्कूटर दिरादे।

(उर्मिला कमरै मे आवै अर अेके कानी घूघटा खीच र)

उर्मिला मा जी म्हैं आ बात कद केयी थाने ? झूठी बाता बणावा ?

कमला तू काल री आयोडी तो साची बोलै अर म्हैं बूढी–सारी झूठ बालू ?

सुन्दर तने सरम को आवैनीं मा सू जीभोटा करती नै ?

उर्मिला तो क्यू कूडा बोलै। म्हारै बापू तो अखबार म साफ लिख्यो हो के म्हें आदर्श ब्याव करसू।

सुन्दर — कैवण नै तो सगळा ही कैवै है के म्हारै कनै तो खाली कुकु कन्या है पण सगळा बढिया सू बढिया ब्याव करै। थारै बाप तो हद करदी।

उर्मिला — तो पाछी पौंचा दो मनैं म्हारै पी रै अर दूजी कोई लखपतण जो र ले आओ।

सुन्दर — देख्यो मा ! म्हैं तनै पैला ई बोल्यो हो कै आजकाल री पढ्योडी छोरया कोई काम री नीं हुवै। बा नै खाली बराबर सामनै बोलणो आवै।

कमला — ओ काळो मनै ही खायो हो बेटा। म्हैं सोच्यो कै बिना मा री छोरी है म्हारो मान राखसी।

सुन्दर — लै करालै मान ! काल आई अर आज सामनै जबान चलावण लागगी।

उर्मिला — काईं जवान चलाई म्हैं ? मा सा आवै जिकै रै आगै रोवणा रोवै के बाप गाव रो सरपच अर दवण न धूड उडगी।

सुन्दर — तो काईं झूठ कैवै है मा ? दायजो तो दड मे पडियो म्हारै बाप नै उघाडै माथै टोर दियो गाव सू। आवै कोनी नाड देखणी अर वैद्य चम्पालालजी उपाध्याय। औषधालय रै नाव सू गाव री चौरासी बीघा जमीन माथे कब्जो कर र बैठग्यो।

उर्मिला — थारै मूढै मे कीडा पडै झूठ बोलता रै। जमीन म्हारै बाप–दादा री है सौ साल रो पट्टो है।

कमला — सरम को आवैनीं खसम रै सामीं लपर–लपर करती नै।

उर्मिला — आ नै सरम को आवैनीं म्हारै बाप माथे ऊधा अर झूठा लाछण लगावता नै।

सुन्दर — हा हा थारो बाप तो देवता है परचा देवै लोगा नै।

उर्मिला — परचा तो देवो ना देवो लोगा नै जीवणदान तो देवै ई हे।

सुन्दर — हा–हा म्हैं जाणू हूँ बे ढोगी नै ?

उर्मिला — जाणो हो तो क्यू ढूक्या म्हारै अठै ? कुण पीळा चावळ भेज्या हा। अर इसो मा सा काईं ले र आया हा दायजो ?

कमला — देख बींदणी थे थारी जाणो। म्हारै परिवार रो नाव बीच मे लेवण री दरकार कोनी।

उर्मिला — *म्हैं तो अठे आवता ही जाण लियो के थानै बहू कोनी धन* चाइजे। म्हे आज ही बापू नै लिख देसू के जे मर जाऊ तो गावआळी जमीन केई मदिर मे चढा देया।

सुन्दर — हा हा अबार ही लिखदे। पछे डाक निकळ जासी।

कमला — जा–जा बेटा तू थारै दफ्तर जा। मोडो हुय जासी। क्यू माथो लगावै है। आ कैनै ई जीतण देवै है ?

सुन्दर — बस राटी खा र जाऊ मा।

कमला — रोटी हाल खाई कोनी ? काईं करतो हो इत्ती देर ?

सुन्दर — रोटी बणावै तो खाऊ। अेनै तो लडाई करणै सू ई फुरसत कोनी।

कमला — जा अबार तो जा। पाछो आ र खा लिये। नई तो दफ्तर नै मोडो हुसी।

(सुन्दर बारै जावै)

कमला — चाखा आदर्श ब्याव कर्‌यो अर आदर्श ही बेटी पैदा करी।

उर्मिला — थारो बेटो तो गुणा री खाण है ? ब्राह्मण रै घर मे जलम लियो है अर रात रा रोज दारू पी र आवै।

(बारै सू अगरचद आवै)

अगरचद — काई बात है बींदणी ? कुण काईं

(बीच मे रोवती बोलै)

उर्मिला — जणे देखो मा–बेटा ताना मारता रैवै कै थारै बाप दायजै म कीं नीं दिया। माजी आवे जिके आगै रोवणा रोवै कै बाप गाव रो सरपच है अर दवण लेवण म धूड उडगी।

कमला — साची बात तो केसू। कद ताइ लोगा आगे ढकणा ढकती रैसू सगै रा।

अगरचद — *तू थारै बाप रै घर सू काईं ले र आई ही ?*

कमला — म्हारै बाप ताईं जावण री जरूरत कोनी है थानै। अर पैला दायजो देवतो कुण हो ? म्हारै बाप छोरी दे दी जिकी

काई कम है थानै।

अगरचद — गाव सू सै र आयगी जिकै सू बाता आवै तनै। जा बेटी तू माय जा। आ रै कानी सू म्हैं था सू माफी मागू।

(उर्मिला माय जावै)

कमला — और चढावो माथे। कर देसी न्याल थानै।

अगरचद — न्याल तो कुण कैनै करै है। तू परणीज र आई जिकी ई न्याल नीं करियो तो दूजो कुण

(बीच मे बोलै)

कमला — तो किसा कीडा घाल्या हा म्हैं थारै ?

अगरचद — अबै अे सू बेसी काईं कीडा घालसी ? हजार बार समझा दी कै आपा चला र चम्पालालजी रै अठै मागो करणै गया अर चम्पालालजी साफ साफ कैयो कै म्हैं ब्याव बिल्कुल सादगी सू करसू। फेरू थे क्यू ताना मारो हो बींदणी नै ?

कमला — कुण ताना मारै है ? हुसी जिकी बात तो कैसा।

अगरचद — जे आ आपरै बाप नै लिख दियो कै थारो जवाई रोज दारू पी र आवे अर सासू रोज दायजे खातर ताना मारै तो म्हारी काई ईज्जत रैसी ?

कमला — इज्जत ही कठै जिको रैसी ? बाप नै राज चिठ्ठिया लिखीजै। थानै के बेरो।

अगरचद — अबै थे रोज रोज कैनै ई इया ताना मारसो तो बा लिख्या विना रैसी ?

कमला — नई रेसी तो किसो म्हारो पट्टो खोस लेसी या गाडा भर र दियोडा पाछो ले जासी ?

अगरचद — चम्पालालजी गाव रा सरपच है। जे बा 498 A रो केस ठोक दियो तो सगळा ने माय धरा देवैला। ज ठा नइ हे तो बालकिसनजी ने जा र पूछ लिये। तीन साला सू जमानत माथे छूट्या है अर बेटो हाल जेळ मे इ है।

कमला — लापो लागे इसी बहुआ नै। अैसू तो छोरो कुवारो रैयोडो चोखो।

अगरचद आज थे लोग अैने तग करो काल थारी बेटी नै कोई तग करसी तो ?

कमला म्हारी बेटी नै तग करै क्यू ? सगो मनै जाणै कोनी ? पूरो दो लाख रो दडबो दाब्यो है छाती मे।

(उर्मिला आवै)

उर्मिला बाबूसा आप खाणो अरोगलो। माजी रै तो आज बरत है..

(बीच मे बोलै)

कमला म्हारै क्यारो बरत है झूठली ? म्हारा तो भूखी मरती रा प्राण निकळ रैया है कणै सू ई।

(हस र)

अगरचद बरत नईं है तो राखलै। आज करवा चौथ ही समझलै।

कमला आज तो तेरस है। अबकी तो करवा चौथ नै ही बरत को राखूनीं। मरो जिका मरो। इसे भरतार सू तो रडापो ई चोखो।

(बारै सू सुन्दर आवै अर उर्मिला माय जावै)

अगरचद आज इत्तो बेगो क्यू आयो है दफ्तर सू ?

(बीच मे बोलै)

कमला भूखो ही दफ्तर गयो हो रोटी खावणनै आवै कोनी ?

अगरचद ओ हाथ मे काई है थारै ? कैरी चिट्ठी है ?

सुन्दर आ चिट्ठी कोनी रायसर सू बिल्टी आई है।

अगरचद बिल्टी खाल र पढ तो !

सुन्दर मने लागै कै उर्मिला आपरै बापू नै चिट्ठी जरूर लिखी है।

अगरचद क्यू, काई बात हुई ?

कमला बिल्टी म काई भेज्यो है बेटा ?

सुन्दर रगीन टीवी कूलर फ्रीज कपडा धोवण री मशीन अेक हीरो हाडा मोटर साइकिल फरनीचर काई ठाह काई काई है ?

अगरचद क्यू, अबे ता काळजो दब्यो था लोगा रो ?

सुन्दर म्हैं थोडो अग्रवाल ट्रॉसपोर्ट कम्पनी जा र आऊ मा।

अगरचद तो सामान किसो भागै है । पैला रोटी तो खायलै। बींदणी कद सू बाट जोवै है।

सुन्दर थे जीमो म्हैं पाछो आ र जीम लेसू।

कमला सुण बेटा अे समान रो बींदणी नै पतो नई लागणो चाइजै कै ओ सामान बै रै बाप भेज्यो है। अर आज रै पछै बींदणी नै कीं ई ऊधो सूधो ना बोले। अबै तो पेट मे बड र खावणो ही चोखो रैसी। समझग्यो नी ?

(बीच मे बोलै)

अगरचद आ बात कद ताईं छानी रैसी ? बेटी बाप नै लिख्या बिना रैसी ?

सुन्दर म्हैं जाऊ मा।

कमला हा जा बेटा पण सामान नै ध्यान सू लाये। कई तोडा फोडी ना कर दिये।

(सुन्दर बारै जावै। उर्मिला आवै)

उर्मिला खाणो ठण्डो हुय रैयो है बाबूसा।

अगरचन्द हा हा आवा बेटी लै उठ बहू कणै री उडीक रैयी है।

कमला थे जा र जीमलो। काई ठाह आज म्हारी भूख रै काई हुयग्यो।

(उर्मिला माय जावै)

अगरचद अबै भूख क्यू लागै । इत्तो सामान देख र बडा बडा रो काळजो ठण्डो हुय जावै। अर अबै ई काळजो ठण्डो नई हुयो तो सगै फ्रीज भेज्यो है बै मे बड र बेठ जाये।

कमला हा–हा थानै पूछ लेसू। *(कमला उर्मिला ने आवाज लगावै)* बहूराणी।

(उर्मिला आवै)

उर्मिला हा माजी।

कमला साग काई वणायो है ?

तीसरो दरसाव

(अगरचद रो मकान। उर्मिला जमीन माथे बेठी है अर कमला कुर्सी माथै बैठी उर्मिला रै माथै मे फेरो देवै।)

कमला देख बींदणी मोट्यार लुगाई मे माडी मोटी खटपट तो चालती ई रैवै अै खातर हगी मूती बात मा बाप आगै थोडी ई कस्या करै।

उर्मिला अै छोटी मोटी बाता है माजी।

कमला नुवैं जमानै रा टींगर है बींदणी। टेम सू नई परणाया कोई ऊचै नीचै घर रो घोडो घर मे घाल लै तो कठै ई मूढो दिखावणजोगा को रैवता नीं।

(सुन्दर लुक र बाता सुणै)

तो म्हारा भाग फोडणा जरूरी हा ? जे म्हैं बापू नै लिख
- कै

तनै म्हारी सौगन है। तू सगोसा नै लिख ना
। लेणै रा देणा पड जासी।

थे ई थोडा कीडा घालो म्हारै ? आवै
।८।

मी तो घर मे रैवै कोनी। अबै लुगाइ
? बस बा आपरै बेटै री बहू माथे ही
आगै सू ध्यान राखसू बेटी। अबै म्हारै
ुआ है।

(ч)

है मा सासू बहू कनै कनै ?

ना पटा पण तू आज दफ्तर सू
है ? हाल तो पाच ही कोनी बजी।

उर्मिला गवारफळी रो अर भगवानजी रै अठै सू गूदपाक री हाती आयोडी है।

कमला भूख तो कोनी पण चाल। दो कवा ले लू। और नईं तो बींदणी रो काम तो निपटै।

(उर्मिला माय जावै)

अगरचन्द इत्ती बूढी हुयगी तोई तू खावणनै कित्ती मरै है ?

कमला क्यू, काईं लार खुवाय दियो था ?

अगरचन्द पैला बोली कै भूखी मरती रा प्राण निकळ रैया है फेरू बिल्टी आवण रो सुण्यो जणै बोली कै अबार मनै भूख कोनी अर भगवानजी रै अठै सू हाती आवण रो सुण र बोलगी कै चाल दो कवा लेलू।

कमला क्यू, म्हैं कदैई मीठो देख्यो कोनी जिको मनै ताना मार रैया हो ? थाळ्या भर-भर देऊ जणै लोग पाछी देवै समझ्या ?

(उर्मिला आवे)

उर्मिला बाबूसा म्हैं खाणो पुरस दियो है। आप पधारो कोनी ?

कमला चाल-चाल बींदणी अे तो बारै सू घोघो भर र आया दीखै।

(दोनू उठै)

मच माथै अधारो

तीसरो दरसाव

(अगरचद रो मकान। उर्मिला जमीन माथै बेठी है अर कमला कुर्सी माथै बैठी उर्मिला रै माथै मे फेरो देवै।)

कमला — देख बींदणी मोट्यार लुगाई में माडी मोटी खटपट तो चालती ई रैवै अै खातर हगी मूती बात मा बाप आगै थोडी ई करया करै।

उर्मिला — अै छोटी मोटी बाता है माजी।

कमला — नुवैं जमानै रा टींगर है बींदणी। टेम सू नईं परणाया कोई ऊचै नीचै घर रो घोडो घर मे घाल लै तो कठै ई मूढो दिखावणजोगा को रैवता नीं।

(सुन्दर लुक'र बाता सुणै)

उर्मिला — तो म्हारा भाग फोड्णा जरूरी हा ? जे म्हैं बापू नै लिख दियो कै

कमला — नईं बींदणी तनै म्हारी सौगन है। तू सगोसा नै लिख ना दिये। नईं तो लेणे रा देणा पड जासी।

उर्मिला — बेटै रै सागै सागै थे ई थोडा कीडा घालो म्हारै ? आवै जिकै आगै बुराई।

कमला — देख बींदणी आदमी तो घर मे रैवै कोनी। अबै लुगाई बे ली बैठी काईं करै ? बस वा आपरै बेटै री बहू माथै ही हुकम चलावै। पण आगै सू ध्यान राखसू बेटी। अबै म्हारै किसी पाच पाच बहुआ है।

(सुन्दर कमरै मे आवै)

सुन्दर — आज किनै सूरज उग्यो है मा सासू बहू कनै कनै ?

कमला — सासू बहू रै तो पटो या ना पटो पण तू आज दफ्तर सू इत्तो बेगो क्यू आयो है ? हाल तो पाच ही कोनी बजी।

(उर्मिला माय जावै)

सुन्दर देख मा सुसरोजी

(बीच मे बोलै)

कमला क्यू ? फेरू कोई बिल्टी भेज दी काई ?

सुन्दर हा मा। अै महीनै मे तीन तीन बिल्टिया आयगी। वै दिन फरनीचर भेज्यो अबकी सोनै–चादी रा गैणा भेज्या है। नई नई करता ई दो–तीन लाख रो माल पक्को है।

(उर्मिला चाय ले र आवै)

कमला देख बींदणी तू आज ही बाबूसा नै चिट्ठी लिखदै कै दिया लिया डूम राजी हुवे। म्हे तो प्रेम रा भूखा हा। सगो सगै री जड हुवै

(बीच मे बोलै)

सुन्दर हा मा। कोई अेढो नुकतो हुवै तो और बात है पण आयै दिन इत्तो खरचो ?

उर्मिला अबै बाबूसा रै लारै कुण खावणआळो है ? आगै लारै म्हैं अेक ही बेटी हूँ।

कमला नई बेटी बाबूसा नै लिख दिय के जवाईसा नाराज हो रैया है। भगवान पइसो दियो है तो लुटावणनै थोडी है ? फेरू आगै खरचो आयो पड्यो है। भगवान भलै सरीसो दे दियो तो सोनै री सीढी चढसू।

सुन्दर सोनै री सीढी तो पडपोतो हुया चढीजै मा।

(अगरचद घर मे आवै)

अगरचद आज काय री हसी आवै है भाई ?

कमला देखो नी सगोसा फेरू बिल्टी भेज दी। इया पइसा आका रै थोडी लागै !

सुन्दर बाबूसा फ्रीज अर रगीन टीवी धरण नै जगा कोनी अर वासिग मशीन नै रसोईघर में फसा राखी है।

अगरचद देख बेटी ओ रोज रोज रा देणो लेणो मनै बिल्कुल चोखो

/लाम्बी नाक

को लागैनीं। नईं तो सगोसा नै मनै लिखणो पडसी

(बीच मे बोलै)

सुन्दर — म्हैं थानै पैला ही कैयो हो बाबूसा। लोग आदर्श व्याव रो खाली दिखावो करै अर धीरै धीरै कर र बेटी रो सगळो घर भरदै

(बीच मे बोलै)

कमला — चिट्ठी लिखण सू काईं हुसी। छह महीना हुयग्या बींदणी नै पी रै गया नै। थे बींदणी नै मिला क्यूनी लाओ।

सुन्दर — हा बाबूसा मा ठीक कैवै। दो–चार दिन थे ई घूम आसो।

कमला — जा बींदणी त्यार हुयजा। दस वजैआळी बस सू व्हीर हुय जावो।

सुन्दर — बस क्यू, मा ? बस मे हिलका लागसी अर बाबूसा ई दोरा रैसी। अे खातर कार भाडै करला हजार–पाच सौ रो खरचो ही तो है।

कमला — तो ऊभो म्हारो मूढो काई देखे है जावै क्यूनी। अर सुण कार कोई नुवीं देख र लाये। वारणै आगै खडी ई चोखी लागै। *(सुन्दर बारै जावै)* जा बींदणी जल्दी सू त्यार हुयजा गाडी अबार आ जासी। *(उर्मिला माय जावै)* देखो जी थे जाओ तो हो पण सगोसा नै लेवण–देवण खातर ऊपरलै मन सू ही मना करस्या। घणो दबा र कैवण री जरूरत कोनी है।

अगरचद — ओ लफडो काइ है ? म्हारी समझ म तो कीं नीं आ रैयो है ? काईं दबा र कैवणो है अर काई नई था मा–बेटै री लीला थे ही जाणो।

कमला — अबै खडा–खडा थे मूढो काई देखो हो ? धोतियो नीं तो चोळो तो नुवो पेरलो।

(अगरचद माय जावै सुन्दर आवै)

कमला — गाडी कर लायो बेटा ?

सुन्दर — ड्राइवर म्हारै सैधो ही निकळग्यो मा। बो आराम सू पूगाय देसी।

(उर्मिला हाथ मे अेक पेटी ले र आवै अर कमला रै पगै लागै)

कमला दूधा न्हावो–पूता फळो। *(अगरचद आवै)* अबै सिधावो। क्यू मोडो करो हो ?

(अगरचद अर उर्मिला बारै जावै। सुन्दर हसतो बोलै)

सुन्दर क्यू मा म्हैं कैयो हो नी सीधी आगळी घी कदैई को निकळैनीं।

कमला बात तो ठीक है बेटा पण अबै तू अै गुटका–बुटका लेवणा बद करदे। जे कदैई थारै सुसरे नै अै बात तो बेरो चालग्यो तो लेवणै सू देवणा पड जावैला।

सुन्दर तीन–चार महीना हुयग्या म्हैं दारू रै हाथ ही को लगायो नीं मा। अर काल म्हैं थारै माथै हाथ राख र सौगन ई तो खायली।

कमला बो तो चोखोई कर्स्यो बेटा। अेक दिन बीदणी बोलै ही कै बाबूसा नै आरै पीवण री ठाह पडगी तो बै आरा..

(बीच मे बोलै)

सुन्दर बै दिन आ बात म्हैं सुण रैयो हो मा। रायसर गाव नै आदर्श गाव रो पुरस्कार अे ही खातर मिल्यो हे कै रायसर गाव मे अेक ही आदमी दारू ता काईं कोई बीडी सिगरेट रै भी हाथ को लगावै नीं।

कमला अे खातर ही म्है बींदणी रै पेट मे बडी बेटा। क्यूक कोई भी छोरी आपरै मा बाप नै बात बताया बिना नीं रैवै। म्है बींदणी नै म्हारी सागन दिराइ कै बा घर री बात इनै बिनै ना करै।

सुन्दर अरे मा ! दारू अर घर मे कळह नईं करता तो बो आदर्श ब्याव करणआळा काई देवाळ हो ?

(हसती बोलै)

कमला अरे ! तू काई म्हैं उठती बैठती ताना मारण मे कोई कसर राखी ही ? बस म्हैं कदैई बैरै माथे हाथ को उठायो नीं।

सुन्दर बो तो चोखो करियो मा। अेकर म्हैं बै रै माथै हाथ

उठावण री कोशिश करी पण बा मनै धक्को दे र भींत मे घाल दियो अर इसी आख्या काढी कै म्है तनै काई बताऊ।

कमला जो भी हुयो ठीक हुयो बेटा। अबै तो पेट मे बड र ही खाया राखो। अैम ही भलाई ह।

सुन्दर साची बात है मा। इत्तै सोरै घर मे रैयोडी समझ मे को आवैनीं कै आ घर कूकर माड लियो ?

(पोस्टमैन री आवाज)

कमला मनै लागै फेरू कोई बिल्टी आयगी। *(सुन्दर बारै जावै अर हाथ मे अेक खाखी लिफाफो ले र पाछो माय आवै)* काई है सुन्दर बेटा ? अेक-अेक दिन मे चार चार बिल्टिया ?

सुन्दर खटाव राख मा चिट्ठी खोल र देखण तो दै। मनै तो कोई लफडो ई लागै क्यूकै लिफाफे माथे कचैडी री छाप है।

(सुन्दर लिफाफो देखै अर खोलै)

कमला अबकी सगोजी काई भेज्यो हे बेटा ?

(मूढो बिगाड र)

सुन्दर लोहै री हथकडी है क्यू पैरणी है ?

कमला आगी बाळ मनै बाळणनै पैरणी है ?

सुन्दर आ बिल्टी कोनी कोर्ट सू कुडकी आई है।

कमला कुडकी ! आ अठै क्यू बळी है ? पढ र तो सुणा काई लिख्यो है अेमे ?

सुन्दर सात तारीख ने आपणै घर री बोली लागसी।

कमला आज कित्ती तारीख हे ?

(मूढो बिगाड र जोर सू बोलै)

सुन्दर चौरासी

कमला जणै तो हाल घणा ही दिन पड्या है।

सुन्दर खाली चार दिन घटै चार दिन पछै आपणै घर री बोली लागसी।

कमला आपणै रै घर री बोली लागसी ? क्यू, करो काई ले'र खायो है जिको बोली लागसी ? थारै बापू नै फोन कर।

सुन्दर आपणो फोन तो खराब पड्यो है। म्हैं बारै फोन कर'र आऊ।

(सुन्दर बारै जावै)

कमला जणै देखो टेलीफोन खराब पड्यो है पण टेलीफोन रो बिल भेजणआळी मसीन कदैई खराब को हुवैनीं। अेक तारीख हुवै कोनी अर हजार–बारै सौ रो बिल। कित्ती बार रो ली के कटाओ–बाळो अेनै पण कटावै किया सगळा नै दिखावो चाईजै। टेलीफोन रो बिल दो–दो अखबारा रा बिल डिस रो बिल पाणी रा बिल रोज री दिन मे तीन–चार बार कटौती फेरू ई बिजळी रो बिल। आ बिला ई बिला सू घर सगळा थोथो हुयग्यो।

अे सरकारी कर्मचारी काम तो करै कोनी टके रो पण धोबा भर–भर'र तनखावा लेवै अर ऊपर सू बोनस लेवणनै मूढा ओर धोवै – क्यू ? आ बापडै मजदूरा ने बोनस कुण देवे है ? बै दीवाळी मनावै कोनी ? *(सुन्दर आवै)* बाबूसा सू बात हुयगी बेटा ?

सुन्दर हा मा बाबूसा बठै सू व्हीर हुयग्या पण अेक बात म्हारी समझ म को आवैनीं कै बाबूसा इत्तै पइसै रो कर्‌यो काई ?

कमला बा नै पइसो क्यू चाईजतो हो ? बा री तो पेसन आवै है।

सुन्दर ता बाबूसा ओ घर क्यू अडाणै राख्यो ?

कमला घर तो अडाणै लूणकी नै परणाई जणै ही को राख्यो नीं हमैं क्यू राख्यो है ?

सुन्दर म्हारै तो कीं समझ मे नईं आय रैयी है मा कै बाबूसा नै इत्तो पइसो क्यू चाइज्यो ? *अेक बात बता मा ? बाबूसा* जुआ–फाटका तो

(बीच मे बोलै)

कमला *आग लागै थारै मूढै मे बै तो जिन्दगी–भर म्हैं कैयो ज्यू*

कस्यो अर कदेई पान बीडी भी कोनी चबाया।

सुन्दर तो इत्तै पइसै रो बापू कस्यो काईं ? कैनै ई उधार दे दियो ?

कमला कित्तै री कुडकी है ?

सुन्दर सात लाख आठ हजार दो सो पचपन रिपिया री।

कमला सात लाख आठ हजार

सुन्दर अेक बात बता मा ? ओ सामान म्हारै सुसरै भेज्यो है ?

कमला किसो सामान किसे सामान री बात करै है तू ?

सुन्दर रगीन टीवी फ्रीज कूलर मोटर साइकिल अे सोनै रा कन्दोडा चादी री पायला ओ इत्तो महगो फरनीचर

कमला तू कैवणो काईं चावै है ? म्हैं समझी कोनी।

सुन्दर ओ समान म्हारै सुसरैजी रै नाव सू कठैई बाबूसा तो

(बारै कानी सू चम्पालाल अगरचद अर उर्मिला घर मे आवै)

चम्पालाल थारो अन्दाजो सही है जवाईसा। सामान सगळो थारा बाबूसा खरीद र म्हारै नाव सू अठै भेजता रैया क्यू अगरचदजी ? म्हैं आपनै केयी ही आजकाळै लोग टाबर को देखैर्नी पइसो देखै धन देखै अर पारटी देखै।

(दोनू हाथ जोड'र)

अगरचद देखो साहजी म्हैं सावरियै री सौगन खा र कैऊ कै म्है ना तो पारटी देखी अर ना धन देख्यो। म्है तो उर्मिला बेटी नै देखी। बै री पढाई देखी। पण म्है पच्चीस साला सू म्हारी जोडायत रै सागे रेय र आरो लालची सभाव का देख सक्यो र्नी जे म्हैं म्हारो घर अडाणे राख र आ लाभिया रो मूढो बद नईं करतो तो अे उर्मिला बेटी नै ताना मार मार जीवती ने ही मार नाखता या उफत र उर्मिला बेटी घर छोड देवती। म्हैं ब्हात सर्मिन्दो हूँ, चम्पालालजी।

चम्पालाल धन्य है आप नै अर आप रै विचारा नै अगरचदजी। आप

री खुद री बेटी रो घर बसावण खातर तो सगळा ही मा बाप धन–दायजो देवै पण थे आपरी बहू नै बचावणनै दायजो दे र वैरी जान बचाई अे खातर म्हैं आप रो सदा रिणी रैसू। *(जेब सू कागज काढ र)* उर्मिला जलमी जणै म्हैं अे रे ब्याव खातर दो लाख रिपिया री एफ डी आर कराई। अबै तो वा रकम दस गुणी हुयगी हुसी। अै कागज लो आ पइसा सू आपरै मकान री कुडकी कदैई नई हुवै।

(कमला आपरी आख्या पूछे अर उर्मिला नै आपरी छाती रै लगावै)

कमला — मनै माफ करदे बेटी। म्हैं पइसै रै लालच में आधी हुयगी।

सुन्दर — मनै भी माफ करदो बाबूसा। सगळै रोग री जड म्हैं हूँ। म्हारे कारण ही म्हारे बाबूसा नै आज आप रै सामने नीचो देखणो पड्यो।

चम्पालाल — कोई नीं कवरसा। दिनूगै रो भूल्यो जे सिज्या नै घरे आय जावै तो बै नै भूल्यो नीं कैवै। अर अेक बात और है जवाईसा बूढा–बडेरा रो मानणो है के जिकै घर मे औरत जात री इज्जत हुवै बै घर म सुख–शान्ति रैवै घर मे लक्ष्मी रो वास हुवै

(सुन्दर चम्पालाल रै पगै लागै बेकग्राउड मे गीत बाजै)

गीत — जिस घर की बहू रगोली सजाती है

(सगळा अेक–दूसरै रे गळै लागै)

धीरे धीरै मच माथे अधारो

आपके नाटक पढ़े अभिभूत हुई। राजस्थानी सस्कृति से ओत-प्रोत। पारिवारिक पृष्ठ भूमि 'मूढै बोलै । 'टैसीटोरी पर आपने खूब लिखा जो सेवायें उनकी रही उस पर बीकानेर निवासियों ने बहुत कम लिखा। आपने उस कमी की भरपाई कर दी। वहा के उस समय के वातावरण का आपने सफल चित्राकन कर दिया। तीनों नाटकों ने मुझपर अपना प्रभाव डाला है।

"पीथल' भी पूरी मौलिकता लिये हुए है। वार्तालाप की भाषा पाठक को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकती। भाषा जाहिर करती है कि दरबारी अथवा कोर्ट की तहजीब अदब कायदे से लेखक की कितनी वाकफियत है।

पद्मश्री डॉ लक्ष्मीकुमारी चुण्डावत

श्री सूरजसिह पवार एक निपूण नाटककार सुदक्ष अभिनेता कुशल निर्देशक होने के साथ-साथ राजस्थानी एव हिन्दी के सुलेखक हैं। आपके अद्यावधि हिन्दी एव राजस्थानी भाषा में प्रणीत तीस-पैंतीस नाटक प्रकाशित हैं।

श्री पवार ने अन्वेषण अनुसधान के उस विदेशी याज्ञिक की साहित्यिक यात्रा का अपनी सशक्त एव सहज भाषा में भाव समीधा द्वारा आहुति दी है।

मैं आशा करता हूँ कि साहित्य-ससार प्रस्तुत नाटक का सम्मान करेगा और श्री पवार उत्तरोतर लेखन द्वारा राजस्थान के गौरव से जन-मानस को परिचित करवाते रहेंगे।

सौभाग्यसिह शेखावत

श्री पवार स्वय एक अच्छे अभिनेता हैं और उन्हें मचीय जीवन का लम्बा अनुभव है अत इस अनुभव की छाप भी इन एकाकियों पर दिखलाई पड़ती है। छोटे-छोटे सवाद गतिशील कथानाक भावोद्रेक करने वाली भाषा आदि बातें उन्हें मच के अनुकूल बनाती हैं।

डॉ किरण नाहटा

सामाजिक सरोकार की मनोवैज्ञानिक स्थितियों से हास्य उत्पन्न करने की लेखक की कोशिश कामयाब है। आज के व्यस्त युग में अमीर-गरीब नेता-अभिनेता छोटा-बड़ा अथवा ज्ञानी-अज्ञानी सभी लोग परेशान हैं अत इस गम्भीर वातावरण में इन्सान को दो क्षण की खुशी या हसने को मिल जाय तो इससे बढकर कोई औषधि नहीं।

हमीदुल्ला